गो-पालन शिक्षा।

गो-बछड़ोंकी पहचान, पालन और चिकित्साकी सचित्र पुस्तिका।

लेखक—
डाक्टर गदाधरप्रसाद मिश्र, एम० बी०
(होमियो)

मुद्रक और प्रकाशक—
रामलाल वर्म्मा, मालिक
'वर्म्मन प्रेस' ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

प्रथमावृत्ति २०००] सं० १९७५ वि० [मूल्य ।=) आ० मात्र

भूमिका

जगदाधारकी असीम दयासे, आज हमें एक ऐसे विषयकी पुस्तककी भूमिका लिखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिसके समान उपयोगी विषय, भारतकी उन्नतिके लिये, दूसरा है ही नहीं।

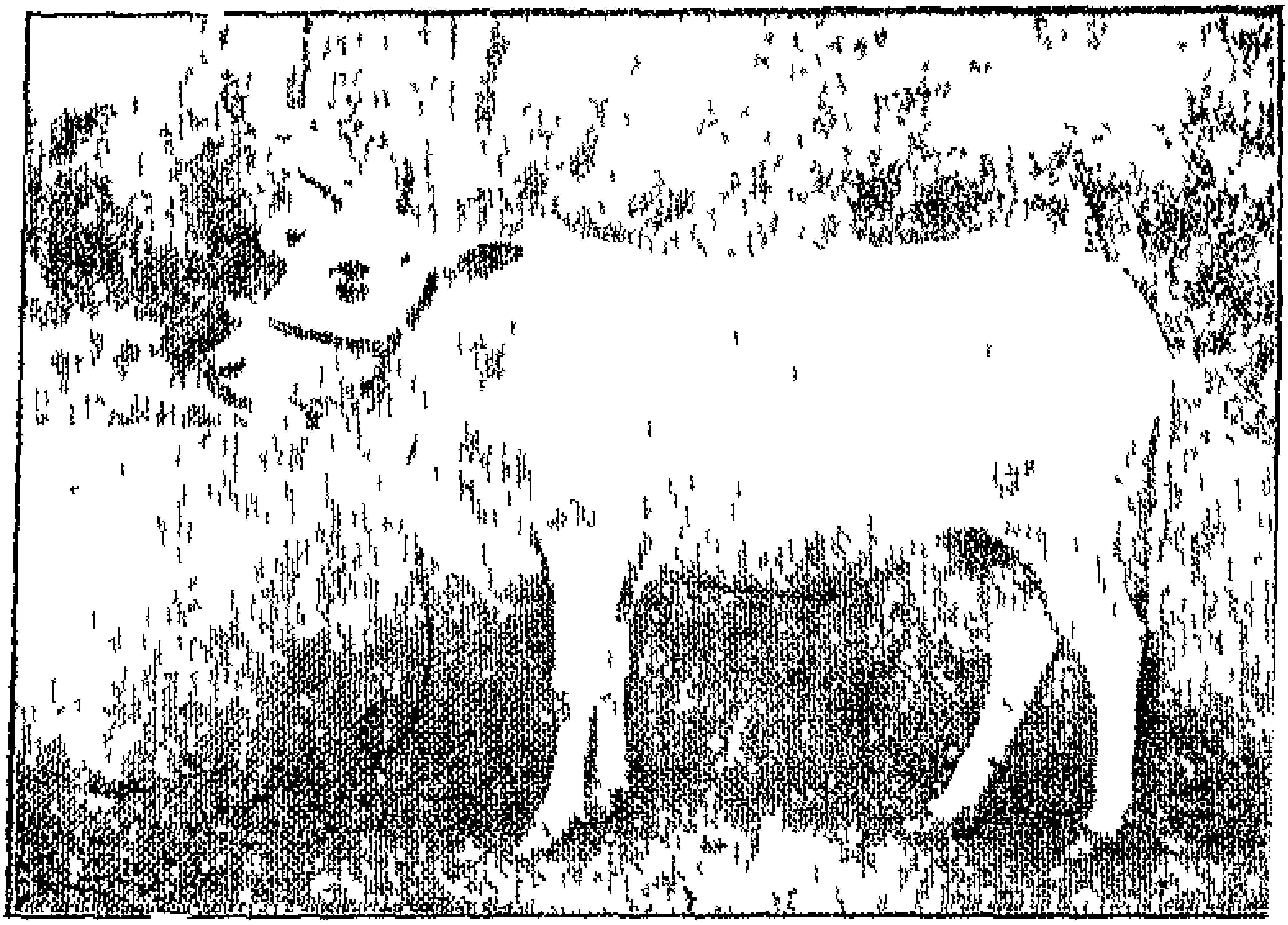
भारत कृषिप्रधान देश रहनेके कारण तथा भारतवासियोंके शरीर-पुष्टिकर साधन, घृत, दुग्ध तथा दुग्धोत्पन्न पदार्थ ही रहनेके कारण, यह अत्यन्त आवश्यक है, कि गोरक्षा, गो-पालन,-गो-पोषण आदि विषयो पर सब विषयोंसे अधिक ध्यान दिया जाये और यही कारण है, कि भारतवर्षमें गो-रक्षाके प्रश्न पर इतना अधिक ज़ोर दिया गया था, कि इसे धर्मका एक प्रधान स्वरूप ही दे दिया गया था और इसमें थोड़ीसी त्रुटिके लिये भी भीषण प्रायश्चित्त और भयानक दण्ड निर्धारित किया गया था; परन्तु काल-चक्रके परिवर्त्तन, भारतमें विदेशियोंके संसर्ग तथा अपनी असावधानता और दुर्बलताके कारण, हमलोग अपना वास्तविक कर्त्तव्य भूल गये, इस विषय पर ध्यान देना छोड़ दिया और उसका परिणाम भी यह हुआ, कि हमलोग दुर्बल, निस्तेज, आलसी, हीनवीर्य तथा उद्यमहीन हो गये। इतनाही नहीं, रोग, शोकने हमलोगोंको घेर लिया, हमलोग अल्पायु होने

लगी और यह प्रत्यक्ष है, कि दिनोदिन हमलोग क्षीण, हमारी सन्तानें शक्तिहीन तथा हमारा भविष्य दुःखमय ही होता दिखाई देता है।

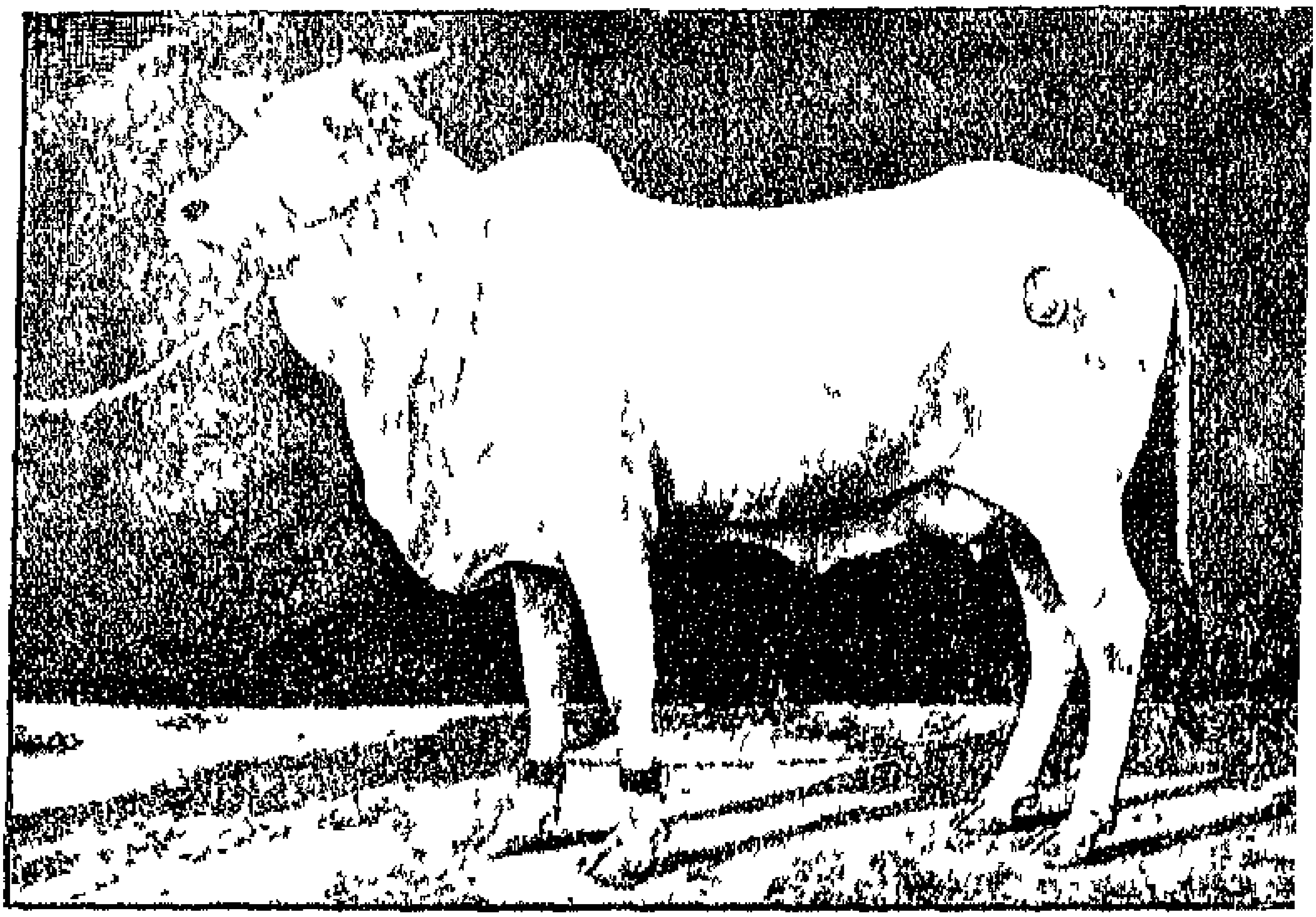
ऐसी अवस्थामें, इस पुस्तकको निर्माणकर, गो-पालन पर अपने दिव्य विचार प्रकट कर तथा गो-रक्षाके लिये भिन्न भिन्न उपयोगिनी औषधियोंका प्रयोग इस पुस्तकमें बताकर, पाठकों-के पूर्व परिचित, प्रसिद्ध "यूरोपीय महायुद्धका इतिहास" नामक पुस्तकके लेखक, भारतवर्षीय गो-महासभा (आल इण्डिया काऊ कान्फरेंस) के संयुक्त मंत्री, बल्कि उसके प्रधान कार्यकर्त्ता पण्डित गदाधरप्रसादजी मिश्र केवल हमलोगोंके धन्यवाद-भाजन ही नहीं हुए, बल्कि उन्होंने देशका अत्यन्त उपकार किया है। अब भारतवासियोंका यह कर्त्तव्य है, कि इस पुस्तक-रत्नको हाथाहाथ अपना लें और इसमें लिखे दिव्य विषयोंको काममें लाकर अपना तथा इस अधोगत भारतका उपकार करें।

कलकत्ता
मि० भाद्रपद कृ० २, १९७५ वि०

भवदीय—
चन्द्रशेखर पाठक।



बङ्गला गाय।



नेलोरी गाय।

Burman Press, Calcutta.

गोपालन-शिक्षा ।

पहला अध्याय ।

भारतवर्ष कृषिप्रधान देश है। यहांके प्रायः ९० सैकड़ा अधिवासी कृषि द्वारा अपना निरवाह करते हैं। कृषि सम्बन्धी प्रायः सभी काम इस देशमें बैलों द्वारा सम्पन्न होता है। बैलोंका होना गायोंपर निर्भर है। जैसी अच्छी गाय होगी, वैसेही अच्छे बैल उससे उत्पन्न होंगे। इस लिये भारतवर्षमें कृषिके लिये गाय सर्व प्रधान है। इस देशमें कृषि-कार्य्य एक दिन भी बिना गायके नहीं चल सकता। यह कहना अनुचित न होगा, कि भारतवर्षमें गाय ही कृषिकी प्राण और आत्मा है। जब गाय ऐसी उपयोगी वस्तु है, तो उसका प्रति-पालन करना भी अति आवश्यक है।

गाय पालनेसे प्रथम लाभ यह होता है, कि मनुष्यके स्वास्थ्यको बढ़ाने वाला ताजा और विशुद्ध दूध प्राप्त होता है।

दूध हीसे मक्खन और घी बनाया जाता है। जो लोग दूध नहीं पीते वे मक्खन तथा घीका व्यवहार अवश्य करते हैं। यदि दूध विशुद्ध नहीं है, तो उससे बना हुआ मक्खन अथवा घी कदापि शुद्ध नहीं हो सकता। अशुद्ध अथवा मिश्रित दूध और घी सदा स्वास्थ्यके लिये हानिकारक है।

द्वितीय लाभ यह है, कि घरमें गाय होनेसे विशुद्ध दूध सस्ता पड़ता है, क्योंकि जितना दूध गाय देती है, उससे आधा अथवा तीन चौथाईसे अधिक व्यय उसके रखने और खिलानेमें नहीं होता। जितना अधिक दूध देनेवाली गाय होगी, उतना ही उसके पालनमें उसकी आयसे व्यय कम होगा।

तीसरा लाभ गायका बच्चा है। यदि वह नर हुआ तो दूध बन्द होनेपर बहुत अच्छे दामोंमें बिक सकता है और मादा हुई तो कुछ दिनों बाद गाय हो जाती है।

चौथा लाभ गोबर है। गोबरसे ईन्धनका काम लिया जाता है। इसके कण्डे और ओपले बनाये जाते हैं, जो लकड़ीकी जगह जलानेका काम देते हैं। गोबरकी खाद बहुत अच्छी होती है, क्योंकि इससे खेतोंकी उपज बहुत बढ़ जाती है। गोबरसे दुरगन्ध भी दूर होती है। जिन स्थानोंमें फिनाइल इत्यादि नहीं मिलता, वहां गोबरसे फिनाइलका काम निकाला जा सकता है।

गायके दूध बिना मनुष्यका काम ही नहीं चल सकता। मनुष्यके बच्चा पैदा होते ही उसको दूधकी आवश्यकता होती

है। दूध उसको उसी समयसे पिलाया जाता है और मरण पर्यन्त मनुष्य दूधका व्यवहार करता है। जब मनुष्य बीमार होता है और खाना-पीना बन्द हो जाता है, उस समय भी उसमें बल बनाये रखनेके लिये डाक्टर, वैद्य दूध ही की व्यवस्था देते हैं।

दूधसे मक्खन और मक्खनसे घी बनाया जाता है। दही, मठा, खोआ, छेना इत्यादि भी दूधहीसे बनते हैं। दूध और उसकी बनी हुई वस्तुओंसे सैकड़ों तरहके अति उत्तम खाद्य पदार्थ बनाये जाते हैं, यह किसीसे छिपा नहीं है।

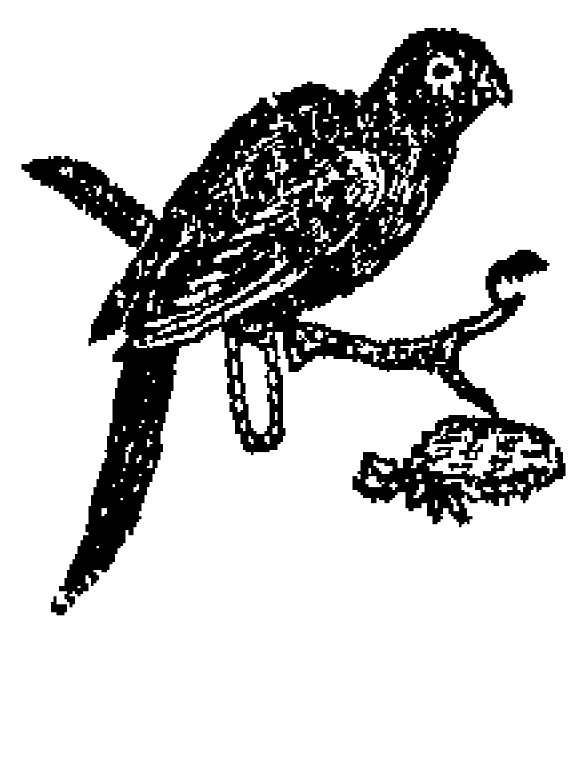
गायसे जो नर बच्चा पैदा होता है, वह बड़ा होनेपर बैल हो जाता है। उस बैलसे खेतीका काम लिया जाता है। यदि भारतवर्षमें बैल न हों, तो खेती क्या सैकड़ों तरहके काम कठिन हो जायं। बैलोंके द्वारा माल एक स्थानसे दूसरे स्थानमें पहुंचाया जाता है। हल जुतवाया और कोल्हू पिरवाया जाता है। जहां रेल नहीं है, वहां सवारीका काम भी लिया जाता है।

भारतवर्षमें पूर्वकालमें एक एक गायके २० सेरसे अधिक दूध होता था। आइने अकबरीसे भी यही बात सिद्ध होती है, कि अकबरके समयसे प्रायः ३२५ वर्ष पहले एक एक गायके आध मन और इससे अधिक दूध होता था। विलायती गायोंके इस समय भी २५ सेरसे ३० सेर तक दूध होता है।

पहले दूध अधिक और अब कम होनेका कारण क्या है?

इसका उत्तर एकमात्र यही है, कि पहले गो-पालन ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य स्वयं करते थे, परन्तु अब इसका भार प्रायः मूर्ख शूद्रोंके हाथमें है, जिससे यह दशा हो गई है।

दूध एक ऐसी वस्तु है, जिसके बिना मनुष्यका जीवन कठिन है। क्योंकि जिस समय बच्चा उत्पन्न होता है, उसी समय उसे रूई द्वारा दूध पिलाया जाता है। बिना दूध और गायके संसारमें कोई देश नहीं है। गायका दूधही एक ऐसी वस्तु है, जिसको खाकर मनुष्य और कोई वस्तु न खाकर भी संसार-यात्रा निरवाह कर सकता है।



दूसरा अध्याय ।

गायकी किस्में ।

भारतवर्षमें अनेक प्रकारकी गायें पाई जाती हैं और पृथक पृथक नामोंसे विख्यात हैं। यहांपर मुख्य मुख्य किस्मकी गायोंका वर्णन किया जाता है :—

१—हांसी और हिसार, यह जिले पञ्जाबमें हैं। यहांकी गायें भारतीय गायोंमें सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं और तीन हाथसे साढ़े तीन हाथ तक ऊंची होती हैं। इनके सिर चौड़े और गर्दन छोटी होती हैं। ये सिर उठाकर चलती हैं। इनके सींग लम्बे और पीछेकी ओर झुके रहते हैं। इनकी दुम पतली और लम्बी होती है। यहांके बैल बहुत बड़े और मजबूत होते हैं। ये भारी बोझ खींचते और बड़ा हल चलाते हैं, परन्तु बहुत तेज नहीं होते, जैसे कि और दूसरे स्थानोंके होते हैं। यहांके बैल देखनेमें सुन्दर और प्रायः सफेद रङ्गके होते हैं। यहांकी गायें १६ सेर तक दूध देती हैं, परन्तु दूसरी जगह जानेसे इनका दूध कुछ कम हो जाता है। इनका दूध बहुत

बढ़िया होता है। देशमें इनका दाम ६०) से १००) तक है परन्तु कलकत्तेमें इनका मूल्य दूना लगता है। बैलोंका मूल्य ८०) से २००) तक होता है।

२—नागौरी गाय और बैलोंका सम्बन्ध नागपुर जिलेसे है, जो मध्यप्रदेशमें है। नागौरी गायें १० से १५ सेर तक दूध देती हैं, परन्तु इनका दूध बहुत बढ़िया नहीं समझा जाता।

यहांके बैल बहुधा सवारीकी गाड़ियोंमें जोते जाते हैं। यह चलते अच्छी प्रकार हैं, परन्तु अधिक बोझ नहीं खींच सकते। ये देखनेमें सुन्दर होते हैं। रङ्ग नीलापन लिये हुए सादा होता है और बड़े नाज़ुक होते हैं।

यहां गायका दाम ८०) से १२५) तक और बैलका २००) से ४००) तक होता है, यहांकी गायें अधिक समय तक दूध देती हैं।

३—मदरास प्रान्तमें 'नेलोर' एक स्थान है। यहांकी गायें अधिक दूध देनेवाली और बैल बड़े परिश्रमी होते हैं, जिसके कारण दाम अधिक लगता है। यहांकी गायें दससे पन्द्रह सेर तक दूध देती हैं। इनका दूध बहुत ही बढ़िया होता है। इनके सींग बहुत बड़े नहीं होते। बैलोंका दाम ८०) से २००) तक और बहुत अच्छी गायका मूल्य ३५०) तक होता है।

४—गुजराती, सूरती अथवा काठिया वाड़ी गायें—बम्बई प्रान्तमें गुजरात और सूरत जिले हैं, यहांकी गायें गुजराती अथवा सूरती कहलाती हैं और बदनमें हांसी हिसारकी गायोंके समान होती हैं। ये गायें अधिक दूध देनेवाली होती हैं।

इनके सींग हांसीकी गायोंसे छोटे और कान बड़े होते हैं। यहांके बैल मजबूत होते हैं और भारी बोझ तथा हल खींचते हैं।

५—पञ्जाबके मुलतान जिलेमें एक तरहकी जुरगैस नामकी गायें होती हैं। इनमें सब गुण तो हिसारकी गायोंके समान पाये जाते हैं, परन्तु हिसार की गायोंकी तरह बड़ी और वैसी नाज़ुक नहीं होतीं। यहांकी गायें मझोली और देखनेमें बहुत ही सुन्दर होती हैं। इनके सींग भी बड़े नहीं होते।

यहांकी गायें ८ से १२ सेर तक दूध देती हैं और मुलतानमें इनका दाम ५०) से १००) तक है।

६—मैसूरी गायें दूध बहुत कम देती हैं, परन्तु बैल बहुत अच्छे होते हैं। यहांके बैल परिश्रमी और मजबूत होते हैं। देखनेमें बहुत बड़े नहीं होते, परन्तु चलते बहुत तेज़ हैं। इन बैलोंका दाम १५०) तक होता है।

७—बंगाली गायोंकी कोई खास जाति नहीं है। यहां अधिकतर दोगली गायें और दोगले बैल पाये जाते हैं। यहांकी गायें और बैल बहुत कमजोर और बहुत ही छोटे होते हैं।

यहांकी गायें ४-५ सेरसे अधिक दूध नहीं देतीं और बैल कामके लायक नहीं होते।

८—दारजिलिंग—यहांकी कोई कोई गायें अंगरेजी गायोंसे मिलती जुलती होती हैं कोई कोई प्रायः जंगली होती हैं। यहां की गायें अधिक काली और लाल होती हैं। गर्म देशमें इनका रहना कठिन है। ये पार्वतीय गाय कही जाती हैं।

९—विलायती गायें भारतवर्षके लिये उपयुक्त नहीं हैं, क्योंकि गर्मीसे उनको कष्ट होता है और दूध भी कम होजाता है। हां, पहाड़ी स्थानोंमें कुछ अच्छी रह सकती हैं। इनको सरसोंकी खली हानिकर होती है। ये हरी घाससे बड़ी प्रसन्न रहती हैं। दोगली विलायती गायें भारतवर्षमें बहुत हैं और अच्छी तरह रह सकती हैं।

१०—बगोधा नामकी गायें अयोध्या जिलेमें पाई जाती हैं। इनके ५ से ६ सेर तक दूध होता है। इनके बच्चे कृषिका काम मजेमें देते हैं। गाड़ी इत्यादिमें भी जोते जाते हैं।

मथुरा और वृन्दावनमें देशी और कोसीमें गायें बहुत पाई जाती हैं।

११—इनके सिवा आलमबादी गायें कावेरी नदीके आसपास पाई जाती हैं। तंजोर देशीय मेना नाम्नी गायें तंजोर प्रान्तमें होती हैं। पश्चिमी घाटके किनारे कंकन, मारहठा, और अखी गायें पाई जाती हैं।

भारतवर्षके सिवा संसारके सभी देशोंमें किसी न किसी प्रकारकी गायें पाई जाती हैं। बिना गायके कोई देश नहीं है।

इस पुस्तकमें केवल भारतवर्ष की गायोंका ही वर्णन किया गया है, अन्य देशोंकी गायोंका नहीं। परन्तु इससे यह कदापि न समझना चाहिये, कि अन्य देशोंमें गायें नहीं हैं।

तीसरा अध्याय।

प्राचीन तथा नवीन कालमें गो-दशा।

पृथ्वीपर आदि ज्ञान, आदि श्रुति ऋगवेद माना गया है, जिसमें 'गोर्मे माता' अर्थात् 'गो' हमारी माता है, यह वाक्य लिखा है। शामवेदमें दही और मक्खनका उल्लेख मिलता है। अथर्वेदमें गो-रक्षाकी व्याख्या है।

सैनाचार्य्यने ऋगवेद्की व्याख्या करते हुए कहा है, कि गायोंसे हमको वाक्य प्राप्त हुआ है।

हमारे पुराणों और तन्त्र-ग्रन्थोंमें गव्य, गोरोचन, गोदान, और गो-सेवाके विषयमें विवरण पाया जाता है।

गो-पालन और कृषि-कार्य्यका सुप्रबन्ध करना हमारे राजा लोगोंका मुख्य लक्ष्य था। जिस समय भरतजी श्रीरामचन्द्रजीसे चित्रकूटमें मिलने गये हैं, उस समय श्रीरामचन्द्रजीने भरतजीसे पूछा है, कि "कृषक और गोपगण तुमसे सन्तुष्ट तो हैं? भाई! जन-साधारणका सुख और समृद्धि कृषिके ऊपर ही निर्भर है।" नारद मुनिने युधिष्ठिर महाराजसे

पूछा था, कि सच्चरित्र लोगों द्वारा क्या कृषि और गो-पालन चलता है? संसार गो-पालन और कृषिपर स्थापित होकर स्वच्छन्द चलता है।

महाराज नहुष महर्षि चैतन्यके निकट उनका मूल्य करनेके लिये गये और कोटि मुद्रा तक देनेको तत्पर हुए, पश्चात् आधा राज्य और फिर पूरा राज्य देनेके लिये कहा, परन्तु उन्होंने कहा, कि उपयुक्त मूल्य नहीं है। तब महाराजने उनका मूल्य एक गौ निर्धारित किया, उसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

एकबार इन्द्रदेवने ब्रह्माजीसे पूछा, कि गो-लोक सब लोकोंके ऊपर क्यों स्थापित है? ब्रह्माजीने उत्तर दिया, कि गो सर्व-यज्ञोंका अङ्ग है। विना गोके कोई यज्ञ, अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो सकता। गो-घृत और गो-दुग्ध पर प्रजाका जीवन निर्भर है। गोके बछड़ोंसे कृषि-कार्य्य सम्पादन करके सब प्रकारका धान्य उत्पन्न किया जाता है। गो-दुग्ध और दधि अति पवित्र होता है। बैल भूखे-प्यासे कार्य्य किया करते हैं।

ब्रह्मचारी-ब्राह्मणको पहले प्रारम्भिक शिक्षा गो-पालनकी ही दी जाती थी। जब ब्रह्मचारी-ब्राह्मण गो-पालनकी कठोर परीक्षामें उत्तीर्ण हो जाता था, तब गुरु दूसरी शिक्षा देकर उसको सुशिक्षित करते थे।

प्राचीन कालमें धनकी गणनामें गो-धन ही प्रधान माना जाता था। विराट सरीखे राजाओंके यहां लाख लाख गायें

रहती थीं और राजा लोग समय समय पर स्वयं उनका निरीक्षण किया करते थे।

गोकी उत्पत्तिके विषयमें महाभारतमें पाया जाता है, कि जब प्रजापति अमृत-पान करके तृप्त हुए, तब उनके मुखके सुगन्धि प्रवाहसे सुरभी उत्पन्न हुई। अनन्तर उसी सुरभीने मातृ तुल्याकपिला गायकी सृष्टि की, यही प्रजादिकके जीवन धारण करनेकी एकमात्र अवलम्ब हुई। जब कपिलागायके बच्चोंके मुखसे निकला हुआ फेन महादेवजीके मस्तकपर पड़ा, तब महादेव जीने क्रोधसे उनकी ओर देखा, देखते ही उन्होंने अनेक रूप धारण कर लिये। प्रजापतिने महादेवजीसे कहा, कि बछड़ेका फेन उच्छिष्ट नहीं है, क्योंकि गायके घृत और दुग्धसे समस्त संसारका भरन और पुष्टिसाधन होगा। फिर प्रजापतिने महादेवजीको एक वृषभ (बैल) प्रदान किया, तब महादेवजीने ऋषभ-वाहन, ऋषभ-ध्वज व पशुपति नाम धारण किया।

'अमृत' नामक कोई पदार्थ भूलोकमें देख नहीं पड़ता, परन्तु गायसे जो अमृत उत्पन्न होता है, वह स्पष्ट दिखाई देता है। जहां गाय होगी, वहां सर्व प्रकारके पदार्थ आप ही आ जायंगे।

श्रीमद्भागवतके दशम स्कन्धमें जो गौ चरानेका इतिहास है, वही बृजलीला है। कौन भारतवासी ऐसा है, जो श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलाको नहीं जानता।

आइने अकबरीमें पाया जाता है, कि गो-जातिसे नाना

प्रकारके उपकार होते हैं, इसीसे अकबर बादशाहने अपने राज्यमें गो-वध बन्द कर दिया था।

पृथ्वीके आदिसे गोवंश गृहपालित पशु समझा जाता है। गो ही पृथ्वीकी आदि सभ्यताका एक उपाय है। ईसाके ३००० वर्ष पहलेके बने इजिप्टके पिरामिडमें गोजातिके चित्र पाये जाते हैं। ग्रीसमें जो सिक्का पहले चलता था, उसपर वृषभ मूर्त्ति अङ्कित थी।

प्राचीनकालमें मिश्र देशके लोग गो-पूजक थे। केलटिक जातिके लोग संसारमें जहां जहां हैं, वहां अब भी गायका अधिक सम्मान है। ईसाई धर्म-ग्रन्थोंमें भी गो-जातिका उल्लेख पाया जाता है। प्राचीन ग्रीक ग्रन्थोंमें भी गो-पूजन पाया जाता है। प्राचीन ग्रीक एवं रोमन धर्म्म-ग्रन्थोंमें गो-जातिने उच्च स्थान पाया है।

चौथा अध्याय ।

भारतवर्षमें गो-जातिकी अवनतिका कारण बहुत अधिक चमड़ेकी रफ़्नी है । सन् १९०३—४ में ३२००००००० रुपयेका चमड़ा भारतवर्षसे बाहर गया (Imperial Gazetteer Vol iii P. 83)

इतिहासोंसे पता लगता है, कि सिकन्दर आज़मने जब भारतवर्षपर आक्रमण किया था, तब वह अपने साथ २००००० गायें भारतवर्षसे ग्रीस ले गया था । इससे यह बात भलीभांति सिद्ध होती है, कि उस समय और उससे पहले भारतवर्षकी भूमि गो-जातिसे परिपूर्ण थी ।

आइने अकबरीसे पाया जाता है, कि अकबरके समयमें २॥) रु० मन घृत, और ॥/) मन दूध बिकता था । अब एक सेर घीका दाम २॥) रु० और एक मन दूधका दाम १०) रु० है । यदि यही दशा रही तो भारतवर्षमें कुछ दिन पीछे दूध और घी मिलना कठिन हो जायगा । अब अमेरिका, स्वीटजर-लैण्ड, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्डसे जमा हुआ दूध तथा मक्खन भारतवर्षमें आता है । यही जमा हुआ, दूध पीकर आजकल भारत वर्षके बच्चे पलते हैं । घीके अभावके कारण

यज्ञ और पितृ कार्य्य प्रायः लोप हो गये हैं। घृतके बदले घृणित पशुओंकी चर्बी काममें लाई जाती है!

गो-जातिके ह्रासके कारणोंमेंसे कुछ निम्न लिखित हैं :—

(१) गो-हत्या।

(२) गोचर-भूमिका अभाव।

(३) उत्कृष्ट सांड़ोंका अभाव।

(४) चमड़ेका व्यवसाय बढ़ जाना।

(५) भारतमें गो-पालन व गो-चिकित्साके लिये विद्यालयोंका अभाव।

(६) गो-चिकित्सालय व औषधालयका अभाव।

(७) गो-चिकित्सकोंका अभाव।

(८) गोपालन-शिक्षा व गो-चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थोंका अभाव।

(९) दूधके लालचसे अधिक दूध निकालना और बच्चोंके लिये दूध न छोड़ना, जिससे वे मर जावें अथवा बच्चोंको दूध न देना पड़े इससे बेंच डालना।

(१०) कहीं कहीं फूका देकर दूध निकालना, जिससे गायोंकी गर्भधारण शक्ति नष्ट हो जाती है।

(११) गायके खाद्य पदार्थोंका अभाव।

(१२) शिक्षित लोगोंकी गोपालनसे घृणा और अ-शिक्षितों द्वारा गो-पालन होना।

समस्त ग्रेटब्रिटेनमें ७७५०००००० एकड़ भूमिमेंसे ४६००००० एकड़ भूमिपर नाना प्रकारकी फसल, घास और कृषि होती है। उसमेंसे पहाड़ तथा बस्ती छोड़कर २३००००००० एकड़ भूमि स्थाई गोचर और घासकी भूमि है। इंगलैण्ड की भूमि अधिक मूल्यवान है, तिसपर भी आधी भूमि स्थाई गोचर-भूमि है, परन्तु हमारे भारतवर्षमें स्थाई गोचर-भूमि है ही नहीं! यही गोचर-भूमिका न होना गो-जातिकी विशेष अवनतिका कारण है। गोचर-भूमिमें जानेसे गायें घास आदि खा और स्वेच्छासे घूम-फिरकर हृष्टपुष्ट होती हैं। गाय एक स्थानमें रहने और नित्य एक ही वस्तु खानेसे ठीक नहीं रह सकती। जङ्गलमें उसे नित्य नई नई वस्तु खानेको मिलती है। पूर्वकालमें भारतवर्षमें बहुत गोचर-भूमि थी, इसी कारण भारतवर्ष गो-प्रधान देश कहलाता था। पहले भारतवर्षमें असंख्य वन और उपवन गोचर-भूमिके स्वरूपमें थे।

आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, हालैण्ड, स्वीटजरलैण्ड और अमेरिकामें उत्कृष्ट गोचर-भूमि हैं, परन्तु भारतवर्षमें नहीं।

यहां सांड़ (Stud Bull)की आवश्यकता बहुत अधिक है। आजकल अच्छे सांड़ प्रायः नहीं हैं। अच्छे सांड़ होनेसे गो-जातिकी अच्छी वृद्धि हो सकती है। उत्कृष्ट गायका पाल उत्कृष्ट सांड़से यदि न हो, तो बच्चा अच्छा नहीं होगा और दूधमें भी कमी होगी। दूसरे देशोंमें लोग अच्छे सांड़ रख १५) रु० से १५०) रू० तक फीस लेकर गायोंके साथ पाल

खाने देते हैं। यह मानी हुई बात है, कि उत्कृष्ट बीजसे उत्कृष्ट फल ही उत्पन्न होता है। भारतवर्षमें उपयुक्त सांड़ फीस लेकर देनेका कार्य्य नहीं था, क्योंकि हिन्दू लोग जब कोई मरता है, तब सांड़ छोड़ा करते हैं, जिनसे कोई काम नहीं लिया जाता। परन्तु अब यह प्रथा कुछ शिथिल सी हो रही है, क्योंकि अब सांड़ोंके साथ पहलेका सा व्यवहार नहीं होता।

पांचवां अध्याय ।

चिकित्सा-ग्रन्थ ।

भारतवर्षमें गो-चिकित्साके लिये कोई अच्छा ग्रन्थ नहीं हैं। पशु-चिकित्सा विषयके ग्रन्थ प्रत्येक भाषामें तय्यार करने और प्रत्येक ग्राम वा नगरमें उनका प्रचार बढ़ाना परम आवश्यक है। जिससे लोग गायके रोगी होनेपर चिकित्सा करके उसको आराम कर सकें। ऐसे ग्रन्थोंका प्रचार उसी प्रकार होना चाहिये जिस प्रकार समाचार पत्रोंका हो रहा है।

इस समय भारतवर्षमें ऐसे ग्रंथोंकी बड़ी आवश्यकता है। इस विषयके जो अच्छे अच्छे ग्रन्थ मिलें, उनका अनुवाद भारतवर्षकी भिन्न भिन्न प्रचलित भाषाओंमें करके उनका प्रचार करना चाहिये। ऐसे ग्रन्थोंके होनेसे सैकड़ों, हजारों गायोंकी प्राण-रक्षा होगी। केवल गायोंकी रक्षा ही नहीं, वरं साथ ही साथ धनकी भी वृद्धि होगी। क्योंकि गायोंकी वृद्धिके साथ कृषिकी वृद्धि होगी और कृषिकी वृद्धिके साथ धनकी वृद्धि होगी।

गोपालन-विद्यालय।

भारतवर्षमें गो-पालन-विद्यालयकी भी बड़ी आवश्यकता है। इस समय गो-पालन मूर्ख लोगोंके हाथमें है। वे लोग पीढ़ी दर पीढ़ीसे यह काम करते आते हैं, परन्तु जानते कुछ भी नहीं। गोकी किस प्रकार उन्नति हो सकती है, यह वे बिलकुल नहीं जानते। इसलिये गो-पालनकी शिक्षाके लिये स्थान स्थान पर विद्यालय स्थापित होने चाहियें। उनमें अनुभवी और योग्य शिक्षक नियुक्त होने चाहियें।

गो-चिकित्सक।

प्राचीन कालमें राजा ऋतुपर्ण, राजा नल और महाराजा युधिष्ठिरके भाई नकुल घोड़ोंकी चिकित्सा बहुत अच्छी प्रकार करते थे। नकुलके भाई सहदेव गो-विद्याके जानने वाले और गो-चिकित्सक थे। अग्नि व गरुड़ पुराणमें गो-चिकित्सा-का विवरण आया है। इस समय गो-चिकित्सासे लोगोंको बड़ी घृणा हो गयी है, कारण यह बताया जाता है, कि गाय-का कोई अंग काटने अथवा चीरने-फाड़ने या औषधि देनेके पश्चात उसके मर जानेसे पाप लगेगा। साथ ही गो-चिकित्सा करके धन उपार्जन करनेको भी लोग पाप समझते हैं। यह नहीं समझते, कि औषधि न करना ही पाप है। महर्षि याज्ञ-वल्कने कहा है, कि यदि कोई गाय चिकित्सा करनेमें मर जाय तो उसके लिये कुछ प्रायश्चित न करना चाहिये।

गो-चिकित्सा-विद्यालय।

भारतवर्षमें गो-चिकित्सा-विद्यालयोंका भी बहुत अभाव है। यदि चिकित्सालय स्थान स्थानपर हों और अच्छी प्रकार चिकित्साकी जाय, तो गो-जातिका कल्याण तथा वृद्धि हो सकती है। जहां गो-जाति होगी, रोग भी होगा और बिना चिकित्सालय हुए जो दशा होती है, वह किसीसे छिपी नहीं है।

अन्य देशोंमें गोचर-भूमि इत्यादि।

डेनमार्कमें कृषि सम्बन्धी व्यवसायोंमें सबसे अधिक लाभदायक गाय ही समझी जाती है।

डेनमार्कमें पहली डेयरी सन् १८८२ ई० में खुली थी और सन् १९१२ ई० में ११६० डेयरियां इस प्रकारकी हो गयी थीं, जिनमें १२८२२५४ गायें थीं।

डेनमार्कमें कृषि सम्बन्धी कारबार और बाहरी व्यवसायमें डेयरीके काममें सबसे अधिक लाभ है। कुल माल, जो सन् १९१२ ई० में डेनमार्कमें बिका, उसका दाम ३७२१००००० क्रौंस था, जिसमें ६७ सैकड़ा डेयरीका माल था। मक्खन, क्रीम और दूध, जो डेनमार्कसे बाहर गया, उसका मूल्य ११८८८००० पौंड अथवा १७८३२००००) होता है, अर्थात् ४१ सैकड़ा कुल मालका होता है जो देशसे बाहर गया।

डेनमार्कमें भैंस नहीं है और केवल गायका दूध मक्खनके

बनानेमें काम आता है। डेनमार्कमें दूध देने वाले पशुओंकी अच्छी देख-रेखकी जाती है और दूध हीके कारबारने डेन-मार्ककी कृषिको लाभदायक बनाया है। १६ वीं शताब्दी तक डेनमार्कके किसान गेहूंकी कृषिमें लगे हुए थे और पशुओंकी ओर उनका कुछ भी ध्यान न था। इसका परिणाम यह हुआ कि फसल कम होने लगी। वहीं फसल अच्छी होती थी जहां पांस दी जाती थी (Paras 93 and 94 of the Report of the Irish Deputation of 1903) किसानोंका मुख्य उद्देश्य डेनमार्कमें दूध और दूधकी बनी हुई वस्तुओंका तय्यार करना है। यहां तक कि दूसरी कृषि सम्बन्धी वस्तुओंसे दूध और मक्खन बनाया जाता है।

ग्रेटब्रिटेन और आयरलैण्डकी कुल भूमि ७७५००००० एकड़ है, जिसमें ४६०००००० एकड़में फसल होती और खाली रहती या घास होती है, २३०००००० एकड़ भूमि गोचर-भूमिके लिये छोड़ दी गयी है। (Vide Cattle, Sheep, & Deer page 13 Macdonald.)

जर्मनीकी सन् १८६३ और १६०० ई० की रिपोर्टोंसे जाना जाता है, कि उस देशमें ६१ सैकड़ा भूमि उरवरा और ६ सैकड़ा ऊसर है। ६५१६६५३० एकड़ भूमिपर खेती हुई थी, २१३६७०० एकड़ भूमिपर घास और गोचर-भूमि थी।

यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिकाके केवल स्टेक्सास प्रान्तमें ४०००००० गाय और उनके बच्चे हैं, जिनके लिये ४०६६०

एकड़ भूमिपर भिन्न भिन्न स्थानोंमें डेयरी फार्म स्थापित हैं (Vide Macdonald Cattle, Sheep & Deer pages 194 and 195)

अमेरिका, आष्ट्रेलिया, हालैण्ड, न्यूजीलैण्ड इत्यादि देशोंमें गोचर-भूमिकी व्यवस्था ग्रेटब्रिटेनके अनुसार ही है।

न्यूजीलैण्डमें कुल भूमि ६७०४०६४० एकड़ है, "जिसमें २८०००००० एकड़ पर कृषि होती है और २७२००००० एकड़ गोचर-भूमि है। (Vide Standard Cyclopedea of modern agiroulture page 88, valumo 9)

उपरोक्त विवरणसे विदित होता है, कि प्रायः सभी देशोंमें गोचर-भूमिका खास प्रबन्ध है, परन्तु हमारे भारतवर्षमें गोचर-भूमिका पूरा अभाव है,और इसी कारण गो-जाति और कृषिकी दशा इस देशमें शोचनीय हो रही है। यदि इस देशमें गोचर-भूमिका प्रबन्ध हो जाय और गोपालनकी ओर लोगोंका ध्यान पूर्ववत होने लगे तो भारतवर्ष फिर पहलेकी सी उन्नत अवस्था पर पहुंच सकता है।

छठवां अध्याय।

डेयरी (*Dairy*)

भारतवर्षमें दूध, घी और मक्खन इत्यादिकी जो दशा इस समय हो रही है, उससे यह सन्देह होता है, कि कुछ दिनों पीछे दूध और घृतका अभाव होना सम्भव है। दूधके बिना जीवन-यात्रा कठिन ही नहीं, वरं असम्भव है। दूधके अभावहीके कारण हमारे बालकोंको जमा हुआ दूध, जो विदेशोंसे आता है, दिया जाता है और उसीसे उनका पालन होता है। जमाया हुआ और अधिक दिनोंका रक्खा बासी दूध कितना हानिकारक हो सकता है, इसको सभी लोग भलीभांति समझ सकते हैं। ताजे दूधके सामने कोई दूसरी वस्तु अथवा खाद्यपदार्थ लाभदायक नहीं हो सकते। जब ऐसी दशा है, तब भारतवर्षमें ऐसी चेष्टा क्यों नहीं की जाती, जिससे सर्वसाधारणको सुभीतेसे दूध, दही, मक्खन और घृत इत्यादि मिल सकें? इसका कारण यही प्रतीत होता है, कि अब भारतवासियों, विशेषकर सामान्य मनुष्योंको गाय

रखनेकी सामर्थ्य नहीं है। इसलिये सुगम उपाय यही हो सकता है, कि जो लोग सामर्थ्य रखते हैं, वे अकेले नहीं तो कुछ लोग मिलकर समवाय समिति (Co operativo Socioty) स्थापन करके भारतवर्ष भरमें डेयरियां (Dairy) खोलें जिससे अपने लाभके सिवा जनसाधारणको भी लाभ और सुभीते हों।

डेयरो (Dairy) उस स्थानको कहते हैं, जहां घी, दूध इत्यादि उत्पन्न होता है और डेयरी फारमिङ्ग (Dairy Farming) से अभिप्राय है, गाय अथवा भैंस रखकर दूध, घी, मक्खन इत्यादि उत्पादन और बिक्रय करना। भारतवर्ष डेयरी करनेके लिये दूसरे देशोंकी अपेक्षा बहुत ही उत्तम है, क्योंकि यहां भूमि, चारा, मजदूरी और दूध देनेवाले पशु, अर्थात गाय भैंस आदि दूसरे देशोंकी अपेक्षा सस्ते हैं। इसके सिवा यहांकी गायका दूध यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादिकी गायोंके दूधसे अच्छा होता है। भारतवर्षमें घी और दूधका दाम भी दूसरे देशोंकी अपेक्षा अधिक मिलता है। दूसरे देशोंकी गायके २५ सेरसे ४० सेर तक दूधमें एक सेर मक्खन निकलता है, परन्तु भारतवर्षकी गायके १२ सेरसे २४ सेर तक दूधमें १ सेर मक्खन निकलता है। तिसपर भी इङ्गलैण्डमें १ सेर मक्खनका दाम १॥) से १॥।) तक है और अमेरिकामें ॥।) से १।) तक है, परन्तु उसी एक सेर मक्खनका दाम भारतवर्षके बड़े शहरमें २) से २॥) तक है। यूरोपमें दूधका भाव ⁄)॥ से ⁄⁄)॥ सेर और अमेरिकामें ⁄)। से ⁄) है। पर

भारतवर्षमें ॥) से ।) तकका भाव बड़े नगरोंमें है। छोटे छोटे गांवोंमें, जहां दूधके ग्राहक कम हैं, वहां ≠)। से ≠)॥ तकका भाव है। यहां घी अथवा मक्खन बनानेमें यूरोप और अमेरिकाकी अपेक्षा व्यय बहुत कम पड़ता है और जैसा कि ऊपर दिखाया गया है, दाम अधिक आता है, इसी कारण यहां डेयरी (Dairy) करनेसे दूसरे देशोंकी अपेक्षा लाभ अधिक हो सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि जब डेयरी फारमिङ्ग भारतवर्षमें अधिक लाभदायक है, तो इस ओर व्यवसाइयोंका ध्यान क्यों नहीं जाता? इसका उत्तर यह मिलता है, कि जो डेयरीका काम भारतवर्षमें किया गया, उसमें प्रायः हानि ही हुई जिससे और लोगोंका साहस डेयरीके काम करनेका नहीं होता। डेयरीमें हानि पहुंचनेके कारण निम्नलिखित हैं:—

(१) प्रायः अनुभव हीन मनुष्यों द्वारा डेयरीका संचालन।

(२) नौकरोंके भरोसेपर सब काम छोड़ देना।

(३) गाय और भैंसको किस प्रकार रखना तथा क्या खिलाना चाहिये, इनसे अनभिज्ञ होना।

(४) दुधार गाय और भैंसकी पूरी पहचान न होना।

(५) गाय और भैंसके रखनेका उचित स्थान न होना।

(६) पड़ोसी व्यवसाई, जिनको डेयरी होनेसे हानि पहुंचती है, सदा डेयरीकी बुराई ग्राहकोंसे किया करते हैं।

ऊपर लिखे हुए सब तथा कई कारणोंसे डेयरीको हानि

पहुंचती है और लाभके बदले नुकसान उठाना पड़ता है। जब किसी व्यवसायमें हानि होती है, तो उस प्रकारका व्यवसाय करनेका साहस वहांके लोगोंको नहीं होता।

डेयरी यदि निम्नलिखित अवस्थामें खोली जाय, तो लाभ निश्चय हो सकता है :—

(१) डेयरीका सञ्चालन करनेवाले डेयरी फारमिङ्गसे विज्ञ हों तो निश्चय लाभ होगा।

(२) डेयरी करनेवाला निजमें सब काम आप करे अथवा अपने निरीक्षणमें करावे, परन्तु उसको यह ज्ञान अवश्य होना चाहिये, कि कौन काम कब करना चाहिये। नौकरोंका हस्त-क्षेप किसी कार्य्यमें न होना चाहिये।

(३) डेयरी करनेवाला पूरा विश्वासी हो और उसको अपना विश्वास बनाये रखनेकी चेष्टा करनी चाहिये जो लोगोंने उसपर बना रक्खा है।

(४) दूध, मक्खन इत्यादिका प्रबन्ध आवश्यकतानुसार होना चाहिये, जिससे बंधे हुए ग्राहक दूसरे स्थानसे अपनी दरकार पूरी न करें।

(५) डेयरीका मूलधन इतना हो, कि जरूरी वस्तुएं आवश्यकतानुसार प्राप्त हो सकें।

(६) पशुओंके खानेका व्यय आयसे अधिक कदापि न होना चाहिये।

ऊपर लिखी हुई बातोंके सिवा और भी बहुतसी बातें

हैं, जो डेयरी खोलनेवालोंमें होनी चाहिये। ऐसी कुछ बातें नीचे लिखी जाती हैं :—

विज्ञ होना।

डेयरी करनेवालेको किसी अच्छे डेयरी फारमिङ्ग अथवा सरकारी डेयरीमें या इङ्गलैंड, स्वीटजरलैण्ड, अमेरिका, डेनमार्क इत्यादि किसी देशमें जा और वहांके डेयरी फार्ममें शागिर्द रहकर सब काम अच्छी तरह सीख लेना चाहिये। कामका सीखना तभी पूर्ण हो सकता है, जब सब काम अपने हाथसे किया जावे, इस लिये सब कामका अनुभव अपने आप प्राप्त करना चाहिये।

मूलधन।

एक सौ गायकी डेयरी खोलनेमें ५००००) लगाना होगा, २५ गायसे आरम्भ करनेमें १००००) अथवा १२०००) रुपया बहुत है। इसमें गाय, भूमि, घर और सब दूसरे आवश्यक सामान आ जायंगे तथा कुछ पूंजी भी बच रहेगी। यदि घर और जगह भाड़ेपर ली जाय तो मूलधन बहुत ही कम आवश्यक होगा, परन्तु शेषमें लाभका बड़ा भाग भाड़ेमें चला जायगा, इससे निजका स्थान और घर ही उत्तम है।

डेयरी फार्मका स्थान।

डेयरी फार्म किसी बड़े नगरके समीप होना चाहिये, अथवा ऐसे स्थानपर हो, कि जो रेलवे स्टेशनके निकट हो और जहांसे दूध, दही इत्यादि ठीक समयपर नगरमें पहुंच सके। इसके लिये उपयुक्त समय ५ और ६ के बीचमें सबेरे और ४॥ तथा ५॥ के बीचमें सन्ध्या को है। इसके सिवा ठीक समय और कम व्ययसे शहरमें माल पहुंच सके।

जिस स्थानपर डेयरी फार्म हो, वह आस-पासके स्थानसे ऊंचा होना चाहिये। जगह बिलकुल सूखी रहनी चाहिये। इस स्थानके समीप ही गोचर-भूमि होनी चाहिये, जिसमें बिना दूध देनेवाली गाय और बच्चे स्वतन्त्रतासे चरा करें। एक गायके लिये कमसे कम सात बीघा भूमि चाहिये। चरनेवाली भूमि कुछ दूरीपर भी हो तो कुछ हर्ज नहीं। एक गायके चरनेके लिये २ बीघा जमीन काफी है, शेष ५ बीघेमें ऐसी चीजोंकी खेती होनी चाहिये, जो गायोंके खानेमें सहायता दे।

किस प्रकारके पशु डेयरी फार्ममें रखने चाहियें?

किसी डेयरी फार्मकी सफलता उसकी गायोंपर निर्भर है। यदि गायें कम दूध देनेवाली हैं, तो उनका व्यय अधिक और लाभ कम होगा—डेयरीवालेको सबसे अच्छा दूध पैदा करना चाहिये। अर्थात दूध अधिक हो, जिसमें मक्खन भी

अधिक निकले। जिस गायके दस मासमें ३७॥ मनसे कम दूध या सवा दो मनसे कम मक्खन निकलता है, वह गाय डेयरीमें रखने लायक नहीं होती। जिस गायके १० सेर दूध या दस छटांक मक्खन रोज होता है, वह अच्छी गाय है। किसी किसी गायके १२ से १४ सेर तक दूध रोज होता है जिसमें १२ छटांकसे २० छटांक तक मक्खन निकलता है। कोई कोई गाय दससे बारह मास तक दूध देती है और कोई कोई ६ से ८ मास तक। सदा ऐसी गाय रखनी चाहिये, जो अधिक दूध अधिक समय तक देती हो।

डेयरीवालेकी सफलता गाय मोल लेनेपर निर्भर है। भारतवर्षमें जितनी प्रकारकी गायें मिलती हैं, उनमें सबसे अच्छी गायें हिसारमें पायी जाती हैं। गायें कौन अच्छी होती हैं और कितने प्रकारकी भारतवर्षमें पायी जाती हैं, इनका विवरण पहले किया जा चुका है। कोई कोई दोगली गाय बहुत अच्छा दूध देनेवाली होती है। जातीय गाय हिसार, नेलोर गुरगेरा, गुजराती और सिंधी होती है और इन्हींमेंसे दोगली भी अच्छी निकलती हैं।

जब गाय दूध नहीं देती, उस समय उसको रखना और फिर जब वह बच्चा दे तब उससे दूध लेना यही एकमात्र बढ़िया डेयरीकी सफलताहै। बढ़िया गाय गाभिन होनेके पहले ३ अथवा ४ मास तक दूध देती है, फिर गाभिन होकर प्रायः ६ मासतक दूध देती रहती है। ३ अथवा ४ मासतक

बिना दूध रहती है। इस समयमें उसे चरनेके लिये कहीं दूसरी जगह रखना चाहिये।

डेयरीवालेको अपनी गायसे बच्चा पैदा करानेमें अधिक लाभ है। प्रतिवार दूध देनेवाली गाय लाने और दूध बन्द हो जानेपर खालीके बेचनेसे सदा हानि होती है। यदि अच्छी गोचर-भूमि है, तो ठांठ गाय बहुत थोड़े व्ययमें रह सकती है। इसके विषयमें आगे चलकर पूरा विवरण दिया जायगा।

डेयरीमें अच्छे हिसारी अथवा नेलोरी सांड़ रखने चाहियें, क्योंकि बिना अच्छे सांड़के बच्चे भी अच्छे नहीं हो सकते। गायको कैसे रखना और क्या खिलाना चाहिये? इसके बारेमें भी आगे चलकर लिखा जायगा।

किसी किसी डेयरीमें लोग भैंस रखते हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि अच्छी भैंसके प्रति दिन २० से ३० सेर तक दूध होता है और गायके दूधसे बढ़िया होता है, क्योंकि भैंसके ८ से १० सेर दूधमें एक सेर मक्खन निकल सकता है। भैंस बहुत बड़ी और बहुत अधिक खानेवाली होती है। एक गायसे तिगुना चारा अकेली एक भैंस खा लेती है। साथ ही भैंस गायसे अधिक नाजुक होती है और शीघ्र ही रोगग्रस्त भी हो जाती है। इसके सिवा भैंसका बच्चा जिलाना बड़ा ही कठिन होता है। इन्हो सब कारणोंसे भैंस डेयरीके उपयुक्त नहीं होती। इसके सिवा भैंसका दूध गर्म होता है और जबतक उसमें पानी न मिलाया जाय, कठिनतासे हज़म

होता है। जहां ठंढा देश है, वहां भैंसका दूध अच्छा लाभ-दायक होता है, परन्तु गर्म देशमें हानिकारक नहीं होता। बच्चोंके लिये तो भैंसका दूध कभी हितकर हो ही नहीं सकता। बच्चोंकी पाचनशक्ति कम होती है और भैंसका दूध गर्म तथा भारी होता है, इससे उनको दस्त आने लगते हैं और फेफड़ा भी खराब हो जाता है। रोगियोंके लिये भी यह दूध उपयोगी नहीं समझा जाता। डेयरीवाले बहुधा भैंसके दूधमें पानी मिलाते और गायके दूधके साथ मिलाकर गायके दूधके नामसे बेचतेहैं, यह अच्छी बात नहीं है।

भारतवर्षमें घोड़ेके बच्चेको भैंसका दूध कभी नहीं दिया जाता। कारण कि भैंसके दूधसे पाले हुए घोड़े गर्मी नहीं सह सकते और जल्दी थक जाते हैं। भैंसके दूधसे घी बनाया जाता है, परन्तु बहुत कम लिया जाता है। गायके दूधसे बना हुआ घी भैंसके दूधसे बने हुए मक्खन और घीसे अच्छा होता है। भैंसका घी और मक्खन सफेद होता है और इसी कारण उसमें रङ्ग देकर गायका बनानेकी आवश्यकता पड़ती है। भैंसका केवल घी अच्छा होता है। परन्तु घीमें लोग तेल, चर्बी इत्यादि मिलाकर दूषित कर देते हैं। इसके सिवा कोई डेयरी घी बनाकर लाभ नहीं उठा सकती, क्योंकि प्रायः डेढ़ सेर मक्खनमें एक सेर घी बनता है। इसलिये डेयरी वालोंको केवल गायसे काम लेना चाहिये।

यहांतक तो उपकारी बातें बतायी गयीं, अब कुछ उन

बातोंका बतलाना भी आवश्यक है, जिनसे बचे रहनेकी डेयरी करने वालेको चेष्टा करनी चाहिये। सबसे प्रथम उसको ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये, कि जिससे पशुओंमें बीमारी न फैलने पावे। अपने ग्राहकोंको शुद्ध वस्तु ठीक समयपर देनी चाहिये। इसमें गोलमाल होनेसे काम खराब हो जाता है। सबसे कठिन शत्रु डेयरीके नौकर होते हैं। वे चोरी करते हैं, पशुओंकी सेवा ठीक नहीं करते और सब काम इस प्रकार करते हैं, जिससे हानिके सिवा लाभ नहीं हो सकता। नौकर बाहरी मनुष्योंसे, जिनका किसी प्रकार डेयरीसे सम्बन्ध हो, मिलकर अपना लाभ उठाना चाहते हैं और इस मनतव्यसे वे लोग खली, भूसा, बिचाली, दाना इत्यादि देनेवालोंसे मिलकर उनसे दस्तूरी स्वरूप कुछ लेकर खराब माल लेना आरम्भ कर देते हैं। यदि यह न हो सका, तो वे खाद्य पदार्थों'की चोरी करके उसको बिक्री करते हैं और पशुओंको कम खुराक देते हैं। चमार लोग भी नौकरोंसे मिलकर जो पशु मरता है, उसके चमड़ेके लिये नौकरोंको 'दस्तूरी देने लगते हैं, जिसके लालचमें पड़कर धीरे धीरे वे पशुओंको विष द्वारा मारने लगते हैं। डेयरीके मालिक समझ रहे हैं, कि पशु बीमारीसे मरते हैं, परन्तु वहां दूसरा ही रास्ता हो रहा है। ऐसे समयमें वहांके व्यवसाइयोंको मौका मिलता है और वे नौकरोंसे मिलकर ऐसा उपाय करते हैं, जिससे गायोंके दूध कम होने लगता है। फिर माल लेने वालोंके नौकरोंको भी दस्तूरी देनी

पड़ती है। यदि उनको दस्तूरी न दी जाय तो वे डेयरीके विरुद्ध नाना प्रकारकी चुगली करने लगते हैं,जिसका परिणाम यह होता है, कि खरीदार दूधका लेना ही बन्द कर देते हैं। यह बातें किसीसे छिपी हुई नहीं हैं। यही सब बातें ऐसी हैं, जो डेयरीके चलानेमें बाधक होती हैं, यदि किसी प्रकार इनसे बचाव हो तो सफलतामें कोई सन्देह नहीं है।

इन्हीं सब बातोंसे बचनेके लिये आवश्यक है, कि सब कामकी देखभाल मालिक स्वयम् करे। यदि किसी बातमें नौकरोंका विश्वास किया जायगा तो धोखा उठाना पड़ेगा।

सातवां अध्याय।

गाय पालनेके नियम।

एकबार बच्चा देनेसे बछियाको गायकी संज्ञा दी जाती है। एक गायके १० बच्चे तक होते हैं। किसी किसीके ४ अथवा ५ बच्चे ही होते हैं अधिक नहीं।

गायके गर्भधारण करनेपर २७० अथवा २८० दिनमें एक बच्चा उत्पन्न होता है। कभी कभी किसी गायके दो अथवा तीन बच्चेतक उत्पन्न होते सुने गये हैं। बच्चा देनेके प्रायः ३ मास बाद गाय ऋतुमती होती है। कोई कोई गाय, ४ वा ५ और ७ वा ८ मास बाद और कोई कोई एक अथवा २ वर्ष बाद भी ऋतुमती होती है। बच्चा देनेके २१ दिन बाद गायका दूध मनुष्यके व्यवहार योग्य होता है, इससे पहले गायके दूधमें मक्खन भी कम होता है।

कामधेनु गाय वह कहाती है जिसके बच्चा नहीं होता और जब इच्छा हो उसको दुह सकते हैं। वह दूध बराबर दिया करती है। यह दूध प्रायः देव-सेवामें काम आता है।

अच्छी गायका आकार बड़ा, सिर छोटा, मस्तक बड़ा और रोंयें मुलायम तथा चिकने होते हैं। अच्छी गायका शरीर नीचेकी ओर झुका हुआ रहता है। काली गायका दूध बहुत अच्छा होता है। लाल और पीली गाय भी अच्छी होती है। लाल गायका दूध मीठा होता है तथा उसकी पाचनशक्ति भी अच्छी होती है। भारतवर्षमें प्रायः काले रंगकी गाय ही अधिक मिलती हैं। जिस गायके सब रोंयें बहुत मुलायम होते हैं और जिसके थन बड़े होते हैं, वह गाय अधिक दूध देनेवाली होती है। अच्छी गायकी प्रकृति मृदु होती है और माताकी भांति स्नेह मयी तथा राग-द्वेषसे विहीन होती है।

भारतवर्षकी गाय १६ सेरसे अधिक दूध देनेवाली नहीं होती। कोई कोई गाय २५ सेरतक दूध देते देखी गयी है, परन्तु इंगलैंडकी गाय एक मन पांच सेरतक दूध देती है।

ऋतुमती होनेपर गाय बहुत चिल्लाती है। स्थिर नहीं रहती और चंचलता प्रकाश करती है। बार बार मलमूत्र त्याग करती है और दूध देनेवाली गाय दूध देना भी बन्द कर देती है। उसका मूत्र-भाग लाल हो जाता है। दूसरी गायपर चढ़ती है और बन्धन तोड़ना चाहती है। कोई कोई ऐसी भी होती है जो बोलती नहीं और अशांत भी नहीं होती, परन्तु दुम हिलाती रहती है और बारबार मल-मूत्र त्याग करती है। यह दशा कई घंटेतक रहती है। इसी समयमें गायको सांड़से

मिला देना चाहिये। ठीक समयपर सांड़के संयोगसे अच्छा फल होता है। देरी होनेसे गर्भधारण होगा या नहीं, इसमें सन्देह रहता है। ऋतुमती होनेपर तुरंत सांड़के संयोगसे बछिया और देरी करके दूसरे अथवा तीसरे दिन संयोग होनेसे बछड़ा उत्पन्न होता है।

भारतवर्षमें सवा दो वर्षसे ३ वर्ष तकमें बछिया गर्भधारण करती है, परन्तु अच्छा पालन-पोषण होनेसे १८ मासमें भी ऋतुमती हो सकती है। दुर्बल और रोगी बछिया तीन चार वर्ष तक गर्भधारणके योग्य नहीं होती। इंगलैंडमें २ वर्षके भीतर बच्चा उत्पन्न होते देखा गया है। गायके दांत गिर जानेपर भी उसे बच्चे हुआ करते हैं।

गायके ऋतुमती होनेपर उसको सांड़के पास एकान्तमें छोड़ देना उचित है। इच्छा और प्रवृत्तिके अनुसार संयुक्त होना उत्तम है। बच्चा देनेके प्रथम व द्वितीय मासमें ऋतुमती होनेपर सांड़से युक्त कराना ठीक नहीं, क्योंकि उससे गर्भधारण नहीं हो सकता। सांड़के साथ संयोग होनेपर गायको नहला देना और ठंढी वस्तुयें खिलाना उचित है। बच्चा देनेके दो मास बाद ऋतुमती होनेपर सांड़से संयुक्त कराना उचित है।

भारतवर्षकी गाय गर्भधारण करनेसे २७० और २८० दिनके भीतर बच्चा देती है पर कोई कोई २९० दिन तक लेती है। गर्भधारण करने पर गाय कुछ मोटी हो जाती है। कोई कोई गाय गर्भधारण करने पर भी ऋतुमता होनेके लक्षण

प्रकट करती है। उस समय परीक्षाकी आवश्यकता है, कि गर्भधारण हुआ है या नहीं? यदि गर्भधारण हो चुका है, तो सांड़के संयोगसे गर्भपात हो जायगा और गायका स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। कोई कोई गाय गर्भधारण करनेके ७ मास बाद भी ऋतुमतीके सब लक्षण प्रकट करती है, उस समय बड़ी सावधानीसे काम करना चाहिये। गर्भधारण करनेके पश्चात गायकी योनिपर पीला रससा दिखाई पड़ता है। इसके सिवा कुछ दिनों पीछे और प्रकारकी परीक्षा हो सकती है। गर्भधारण करनेके पहले गायको पुष्टि कारक वस्तुएं खानेको देनी चाहियें। गर्भ-रक्षाके लिये सांड़ निरोग और अच्छा होना चाहिये। गर्भधारण करने पर गायको नहला देना चाहिये पर इसके पहले उसको थोड़ा दौड़ा लेना उचित है। उत्तम गायका संयोग उत्तम सांड़से ही कराना चाहिये। १५ अथवा १६ वर्षकी आयु होनेपर प्रायः गाय बच्चा देना बन्द कर देती है।

गर्भवती गायको बड़ी सावधानीसे रखना चाहिये। दूसरी गायसे लड़ने अथवा जोरसे भागनेसे गर्भ-पातका खटका रहता है। गर्भवती गायको एक स्थानपर बंधा हुआ न रखना चाहिये, क्योंकि चर्बी बढ़नेसे बच्चा कमजोर होगा, इस-लिये गर्भवती गायको धीरे धीरे इधर उधर घुमाना चाहिये। भारतवर्षके बड़े नगरोंमें बहुधा मरे हुए बच्चे इसी कारणसे पैदा होते हैं। खली अथवा और कोई उत्तेजक खाद्य पदार्थ न

देना चाहिये। क्योंकि उनसे गर्भ-पातका भय रहता है। गर्भवती गायको स्नान कराना और साफ रखना उत्तम है। गर्भ-पात होनेपर गायका पिछला भाग गर्म जल और फिनाइलसे धोना चाहिये।

जब गाय बच्चा देनेवाली होती है तो कई घंटे पहलेसे भोजन त्याग देती है। उसकी आखोंसे आंसू निकलने लगते हैं और पेटमें वेदना होनेके कारण बार बार उठती बैठती है, उस समय उसकी भली प्रकार चौकसी करनी चाहिये। जब बच्चेका सिर और पैर दिखाई पड़े तो फिर गायको उठने न देना चाहिये, प्रकृतिके नियमानुसार आप ही बच्चा उत्पन्न हो जायगा। यदि औषधिकी आवश्यकता प्रतीत हो, तो वेदना होते ही ५० ग्रेनसे ८० ग्रेन तक कुनैन देदेनेसे ही तुरंत बच्चा उत्पन्न हो जायगा।

बच्चा उत्पन्न होनेपर यह आवश्यक होगा, कि गायके पेटसे खराब जल और आंवर (खेड़ी या बेलि) भली प्रकार निकल जाय और गाय उसको खा न जाय। आंवर प्रायः ४ घंटेमें निकल जाती है। यदि न निकले तो गर्मजलके साथ एक पाव गुड़, एक पाव अदरक या सोंठ, और एक छटांक कच्ची हल्दी पीसकर मैदेके साथ मिलाकर ५ घंटेमें दो बार खिलानेसे आंवर गोबरके साथ निकल जायगी। कुछ धान, बांसकी पत्ती इत्यादि खिलानेसे भी आंवर निकल जायगी। आंवरको उठाकर दूर फेंक देना चाहिये जिसमें कि गाय किसी

प्रकार उसका खाने न पावे, खानेसे रोग उत्पन्न होगा। यदि गाय बच्चेको न चाटे तो बच्चेके ऊपर गुड़ अथवा कच्चा दूध छिड़क देनेसे गाय उसको चाटने लगेगी। बच्चा हो जानेपर गायका पिछला भाग गर्म जलसे धोकर उसपर सरसोंका तेल और कपूर मिलाकर दो चार दिन तक लगाना चाहिये। बच्चा होनेके पीछे गायको ठंढा जल न देना चाहिये और उसको बराबर गर्म रखना चाहिये। यदि कम्बल उढ़ा दिया जाय तो बहुत अच्छा हो। एक सप्ताह तक गर्म जल पीनेको देना चाहिये।

दूध देनेवाली गायको सदा अच्छी अच्छी चीजें खिलानीं चाहियें। किसी प्रकारकी दुर्गन्धि होनेसे गाय सानी नहीं खायगी और एकबार मुंह उठा लेनेसे फिर उसका खिलाना कठिन होगा। इसलिये जब खानेको दिया जाय तो जिस पात्रमें खानेको देना हो, उसको भली प्रकार धोलेना चाहिये और खाद्यपदार्थ भी भली प्रकार साफकरके खानेको देना चाहिये।

दूध दुहनेके पहले गायको कुछ खिला देना चाहिये, क्योंकि खाली पेट होनेसे चंचल रहेगी और दुहनेमें कष्ट होगा। प्रातः-काल हरी वस्तु, गुड़, दाल इत्यादि मिलाकर भली प्रकार खिलाकर दुहनेसे दूध अधिक होगा। दुहनेके पीछे गायको गोचर-भूमिमें चराना चाहिये। धूप होनेपर फिर गोशालामें लाकर खली, भूसी इत्यादि खिलानी चाहिये।

८ अथवा १० सेर दूधदेनेवाली गायको कुचला हुआ जौ, गेहूं, जई अथवा उबाली हुई चावलकी खुद्दी एक सेर, खली आधासेर, बिनौला तथा चना अथवा कलाई एक पाव, कलाईकी भूसी डेढ़ सेर, कच्चा घास छोटा छोटा कटा हुआ पांच सेर, सब एक साथ मिलाकर आधी छटांक नमक मिला-कर खानेको देना चाहिये। इसमें यदि आधा तोला गंधक मिला दिया जाय तो बहुत ही अच्छा है। अनाजकी चीजें यदि भिगानेके पीछे पकाली जायं तो बहुत ही उत्तम हो। इसी रीतिसे अधिक और न्यून किया जा सकता है। यदि कच्ची घास न मिले तो खर देना चाहिये। चावलका धोया हुआ जल, भातका माड़ इत्यादि गायके लिये अति उपकारी हैं। दोपहरके बाद गायको अच्छे स्थानमें बांध देना चाहिये और संध्याको ठंढा साफ जल पिलाकर ऊपर लिखे अनुसार खानेको देना चाहिये। मास-कलाईके बराबर दूध बढ़ानेवाली कोई दूसरी वस्तु नहीं होती। दूध बढ़नेके साथ साथ शरीर भी-पुष्ट होता है। मास-कलाई ठंढी होती है इससे शीतकालमें हानिकर हो सकती है। दुबली गायको मोटा करनेके लिये गेहूं अथवा भात देना उचित है। बिनौला बड़ीसे बड़ी गायको भी आध सेरसे अधिक न देना चाहिये।

सरसोंकी खली दूध देनेवाली गायके लिये उपकारी नहीं है। तिल या तीसीकी खली बहुत उपकारी है।

सूखी भूसी गायको कभी न देनी चाहिये क्योंकि पेटमें

जानेसे सूखी भूसी फूलती है और नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करती है। गायको हरी घास देनी ही पड़ेगी। इसके लिये दूर्वा घास सबसे उत्तम है। कटी हुई बिचाली भी खिलाई जा सकती है।

गायके पीनेके लिये अच्छे पानीका प्रबन्ध होना चाहिये। मैला और खराब पानी पीनेसे गाय रोगी हो सकती है और उसका दूध भी उतना हितकर नहीं होगा वरं सम्भव है, कि जो दूध पियेगा वह भी रोगग्रस्त हो जायगा।

जो गाय दो वर्षतक सांड़से संयोग करके भी गर्भधारण न करे उसको बन्ध्या गाय कहते हैं। पुष्टिकर खाद्य पदार्थों तथा उत्तेजक वस्तुवोंके अधिक खानेसे गायके चर्बी बढ़ जाती है और गर्भधारण-शक्तिका ह्रास हो जाता है। फूका इत्यादि अस्वाभाविक उपायोंसे दूध दुहनेसे गर्भधारण-शक्ति जाती रहती है। कोई कोई गाय बारंबार मरा हुआ बच्चा देनेसे बन्ध्या गाय हो जाती है। अधिक परिश्रम और आहारके अभावसे भी गाय बन्ध्या हो सकती है। यदि मोटी होनेके कारण गाय बन्ध्या हो जाय तो उसको केवल हरी अथवा सूखी घास देनी चाहिये और परिश्रम लेना चाहिये, ऐसा होनेसे गर्भधारण हो सकता है।

दस ग्रेन सोहागा चार पांच दिनतक बराबर खिलानेसे भी बन्ध्या गायके गर्भ रह सकता है।

यदि गाय ऋतुमती न होती हो तो कुछ दिन तक सूखी खली

खिलानेसे वह अवश्य ऋतुमती होगी। गाय फाल्गुण, चैत्र, वैशाख और जेष्ठ मासमें प्रायः ऋतुमती होती है।

किसी किसी गायका चार पांच मासमें गर्भपात हो जाता है और क्रमशः ऐसा होनेसे एक प्रकारका रोग हो जाता है जिससे कि गर्भपात हो जाया करता है।

जिस गायके मरा हुआ बच्चा हुआ हो उसके ऋतुमती होनेपर तुरंत सांड़से संयोग न कराना चाहिये, दो दिनके पश्चात संयोग कराना अच्छा होगा।

गायके जिस बच्चेका चमड़ा मुंहसे गले तक ढीला, *वक्षस्थल गोल, पेट लम्बा, नाक छोटी और ऊपरकी ओर टेढ़ी* तथा पैरकी गांठ मोटी हो, वही अच्छी गाय होगी। अच्छी बछियाका चमड़ा मुलायम, रोंयें नर्म और माथा लम्बा होता है।

बछड़ा पालनेके स्वाभाविक और कृत्रिम दो उपाय हैं। भारतवर्षमें स्वाभाविक उपायसे ही बच्चोंका पालन होता है। विलायती गायका दूध कल द्वारा निकाला जाता है, परन्तु भारतवर्षमें यह उपाय नहीं चल सकता। यहां कृत्रिम उपाय द्वारा दूध दुहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। बच्चोंको भली प्रकार पालना चाहिये क्योंकि इसीपर गोजातिकी वृद्धि निर्भर है।

यदि आवश्यकता हो तो बच्चेको हाथकी अंगुलीसे उसका मुंह खोलकर चम्मच अथवा किसी और उपायसे दूध उसके मुंहमें डाल दे फिर चारपांच दिनमें बच्चा आपसे आप

पीने लगेगा। बच्चा तीन सप्ताहका होनेसे कुछ कुछ घास खाने लगता है, इसी प्रकार जैसे जैसे घास खाने लगे, दूध कम देना चाहिये। तीन मासके पीछे कुछ खली देनी चाहिये और पांच मासके पश्चात धीरे धीरे दूध बन्दकर देना चाहिये और कुछ भूसी, जौ इत्यादि घासके साथ देना चाहिये।

बछियाके पालन-पोषणमें विशेष ध्यान देना चाहिये क्योंकि उसीपर गो-जातिकी वृद्धि निर्भर है।



आठवां अध्याय ।

दूध और उससे बनी हुई वस्तुएं ।

यह सिद्ध है कि दूधके बिना मनुष्यकी जीवन-यात्रा दुर्लभ है। दूधका वर्णन पहले हो चुका है, अब यहांपर यह दिखाना आवश्यक है, कि दूधमें क्या क्या पदार्थ मिले हुए हैं, जिनके कारण दूध मनुष्यके खाद्य पदार्थोंमें सबसे उत्तम माना जाता है। नीचे लिखे हुए टेबिलसे स्पष्ट मालूम होगा, कि कितने प्रकारके दूध प्रचलित हैं और उनमें क्या क्या पदार्थ मिले हुए हैं :—

दूधदेनेवाले पशु		जल	पनीरका तलछट	सफेदी	चिकनाहट	चीनी	नमक
गाय	...	८७.०	३.३	०.४	३.८	४.८	०.७
बकरी	...	८७.५	३.००	०.७	४.२	४.०	०.६
स्त्री	...	८८.०	१.०	०.७	३.३	६.८	०.२
गधी	...	९०.०	०.९	०.६	१.२	६.८	०.५
घोड़ी	...	९९.७	१.२५	०.७	१.१७	५.७	०.३१
भेड़ी	...	७८.४६	५.७८	१.४५	८.६३	४.२८	०.९७
भैंस	...	७८.६३	३.५४	०.६०	७.६१	४.७२	०.९०

कुछ लोग बकरीका दूध बच्चोंके लिये अधिक उपयोगी बतलाते हैं, परन्तु इसका कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता। बकरीके दूधमें (चिकनाहट) का भाग अधिक और चीनोका भाग गायके दूधसे कम होता है। इसके सिवा बकरीके दूधमें एक प्रकारकी गंध होती है जिसको बहुत लोग बर्दाश्त नहीं कर सकते।

यूरोपमें भेड़ और भैंसका दूध कोई नहीं पीता। भैंसका दूध भारतवर्षमें और कुछ अफ्रिकामें काममें आता है, परन्तु बच्चोंके लिये यह अच्छा नहीं होता। भेड़का दूध सीरियामें पिया जाता है परन्तु यूरोपमें पनीरके काम आता है।

दही।

दूधसे दही बनाया जाता है—वैज्ञानिक लोग ल्याकटिक एसिड बैकटेरिया (Lactic Asid Bacteria) के द्वारा दही बनाते हैं परन्तु भारतवर्षमें दूधमें खटाई अथवा खट्टा दही देकर दूधको जमाते हैं। पहले दूध गर्म करते हैं फिर ठंढा करके किसी बर्तनमें रखकर उसमें थोड़ासा दही मिलाकर रख देनेसे जमकर दही होजाता है, यदि सर्दी अधिक पड़ती हो तो दही जमानेके पात्रको कम्मल आदिसे ढंक कर रखना चाहिये। चार पांच घंटेमें दही जमकर तय्यार हो जाता है। कच्चे दूधसे भी दही इसी प्रकार बनाया जाता है। कच्चा दूध अधिक देरतक रहनेसे आपसे आप दही बन जाता है। वैद्यकशास्त्रके अनुसार गायके दूध

का दही सबसे अच्छा होता है। यह बलकारक, रुचिप्रद, पवित्र, अग्निदीपक, पुष्टकारक और वायुनाशक होता है। रातको दही खाना मना है परन्तु दहीमें चीनी और जल मिलाकर रातको भी खा सकते हैं।

मठा (छाछ)

मठेका चलन यूरोपमें नहीं है। दहीको मथनेसे मठा बनता है। मठा चीनीके साथ मिलाकर खानेसे बड़ा उपकारी होता है। नमकके साथ खानेसे अग्निवर्धक होता है। जो लोग मठा बराबर खाते हैं, उनको कोई रोग नहीं हो सकता। मठा नरलोकमें अमृतके समान है।

मलाई (बालाई) क्रीम।

दूध गर्म करनेसे ऊपर जो घृतका भाग रह जाता है, उसको मलाई कहते हैं।

दूध किसी ठंढे स्थानमें १२ अथवा १४ घंटेतक रहनेसे उसके ऊपर जो बारीक पदार्थ जम जाता है, उसको क्रीम कहते हैं। इसको उठालेनेसे जो दूध रह जाता है, उसको अंगरेजीमें स्किम्ड मिल्क (Skimmed milk) कहते हैं। क्रीममें सब मक्खन नहीं आ जाता। दूधको आग पर उबालकर औसा देनेसे अच्छी मलाई पड़ जाती है।

मक्खन ।

मक्खन कच्चे दूध, दही, क्रीम और मलाईसे निकलता है। यूरोपमें कच्चे दूध हीका मक्खन निकाला जाता है, परन्तु भारतवर्षमें कच्चे दूधको मथकर भी मक्खन निकालते हैं और दूधको गर्मकरके दही बनाकर फिर उससे मक्खन तय्यार करते हैं। मक्खनको आगपर तपानेसे घी बन जाता है।

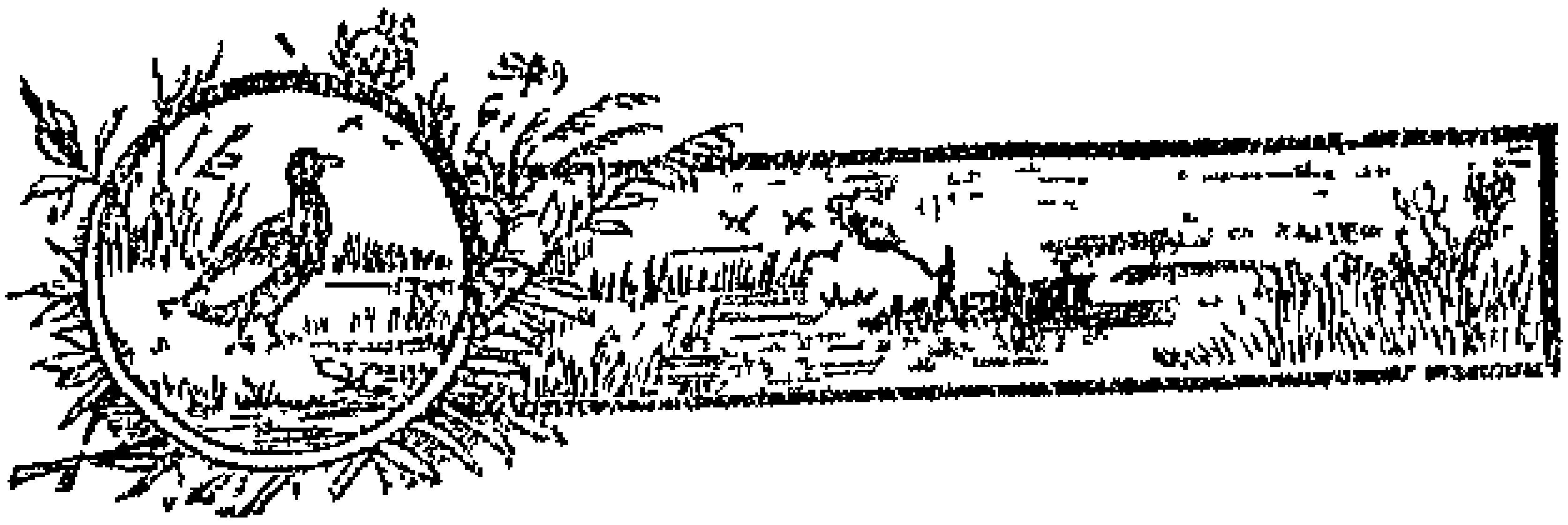
खोवा (मावा) और छेना ।

दूधको औटानेसे जब गाढ़ा हो जाता है तो खोवा तय्यार हो जाता है। खोवासे नाना प्रकारकी मिठाइयां तय्यार होती हैं।

दूधमें कोई एसिड देकर फाड़ देनेसे छेना बन जाता है, इससे भी नानो प्रकारके मिष्टान्न बनाए जाते हैं पर छेनेका प्रचार बंगालमें ही अधिक है।

पनीर ।

पनीरका व्यवहार यूरोपमें और और देशोंसे अधिक होता है परन्तु भारतवर्षमें इसका व्यवहार कम है क्योंकि इसके बनानेमें ऐसी वस्तुवोंका प्रयोग होता है, जिसको हिन्दूमात्र नहीं ग्रहण कर सकते। परंतु एक नयी विधिसे पनीर तय्यार किया जा सकता है, जिसको सब सम्प्रदायके लोग ग्रहण कर सकते हैं।



नवां अध्याय ।

पशु-रोग और उनकी चिकित्सा ।

मनुष्योंका कर्त्तव्य है, कि वे जो पशु पालें उनको इस प्रकार रक्खें जिससे उनको कोई रोग न हो, क्योंकि रोग उत्पन्न होने और फिर चिकित्सा करके उन्हें आरोग्य करनेसे यह कहीं उत्तम है, कि उनमें रोग ही न हो।

रोगी पशुकी चिकित्सा साधारण औषधि द्वारा, जो बिना कठिनताके प्राप्त हो सके, करना उचित है।

पशु-जातिको साफ सुथरा रखना, ऐसे स्थानमें रखना जो सूखा हो और जहां शुद्ध वायु आता हो तथा शुद्ध और साफ पानी पिलाना तथा पुष्टिकर आहार देना उचित है। ऐसा करनेसे पशु-जाति बहुत कम रोगग्रस्त होगी।

पशु-जातिके लिये तरल औषधि अधिक उपकारी होती है। अदरक, राई, सोंठ इत्यादि बहुत ही उपयोगी वस्तुवें हैं। गायके लिये औषधिकी मात्रा घोड़ेसे दूनी होनी चाहिये। नमक पशु-जातिके लिये अति उपयोगी पदार्थ है।

पशुकी नाड़ी अथवा जबड़ेकी परीक्षा करनेसे रोग निश्चित हो सकता है। मनुष्यमें जो रोग होते हैं, प्रायः वही रोग गो-जातिमें भी होते हैं। रोगकी परीक्षा स्वाससे भी होती है।

नाड़ीकी परीक्षा गोकी गर्दनके शेषसे अथवा पूंछकी जड़से होती है। उस स्थानपर तर्जनी और मध्यमाको एक ओर और अंगूठेको दूसरी ओर रखकर दबानेसे नाड़ी मिलती है। जैसी आयु होगी, उसीके अनुसार नाड़ीकी गति भी होगी। कम आयु वाले पशुकी नाड़ी एक मिनटमें ५५से ६५ तक चलती है।

स्वासका निर्णय पशुके वक्षस्थलमें कान लगानेसे होता है; अथवा कलेजेमें, जो उठता और दबता है, उसके देखनेसे होता है। स्वासकी संख्या प्रति मिनट १०से १५ बार तक होती है।

मनुष्यको जो रोग होते हैं, प्रायः वही सब रोग पशुको भी होते हैं, इस लिये उसी प्रकारको चिकित्सासे पशुको भी लाभ हो सकता है।

मनुष्य और गायकी एक प्रकारकी चिकित्सा होनेके कई कारण हैं :—

(१) मनुष्यका शरीर गायका दूध पीकर उसी प्रकार पुष्ट होता है, जिस प्रकार माताका दूध पीकर होता है।

(२) स्त्रियोंकी भांति गायके भी ९ मास १० दिनके भीतर बच्चा होता है।

(३) गायकी चेचक द्वारा मनुष्यके टीका लगानेसे मनुष्यके शरीरमें चेचक निकलती है।

(४) अधिक चिकित्सकोंका मत है, कि गायका मनुष्य-की व्याधिके अनुसार चिकित्सा करनेसे लाभ होता है।

(५) मनुष्यसे गायकी औषधिकी माला ६ से १० गुनी अधिक होनी चाहिये।

(६) औसत दर्जेकी गायके लिये मनुष्यसे ८ गुनी औषधि उपयोगी होती है। बङ्गला गायके लिये ६ गुनी और हांसी हिसार तथा मुलतानी गायके लिये १० गुनी अधिक माला चाहिये।

गो-जातिके रोग।

गो-जातिको ठीक समयपर खानेको न देने अथवा बहुत कम वा बहुत अधिक खानेको देनेसे रोग उत्पन्न होता है। गायको भूखी छोड़ देनेसे वह इधर उधर फिरकर जो कुछ मिलता है, उसे खाकर रोगग्रस्त हो जाती है, इसलिये गायके खानेकी अच्छी व्यवस्था होनी चाहिये। वर्षाकालमें पानीसे डूबी हुई और सड़ी घास खाने अथवा अधिक जलमें भीगनेसे गाय रोगग्रस्त होती है इसलिये इनसे बचाना चाहिये।

बसंत वा गोटी (चेचक)

.. बसंत अथवा गोटीका रोग गायको अधिक होता है और इससे गो-जातिको बहुत अधिक हानि पहुंची है। इस

रोगको अंगरेजीमें रिण्डरपेष्ट (Rinder pest) कहते हैं।

इस रोगके लक्षण यह हैं, कि पहिलेसे ही शरीरमें ज्वरकी वृद्धि होती है और ताप १०५से ११० डिग्री तक हो जाता है। गोटी निकलनेपर ज्वर कम हो जाता है। नाड़ी चंचल और कमजोर हो जाती है। आलस्य, कंपकंपाहट, खांसी और अग्निमंद हो जाती है। कान लटक पड़ते हैं, कोष्ट बद्ध हो जाता है, गोबरके साथ स्लेष्मा निकलता है। भूख बिल्कुल कम हो जाती है, प्यास अधिक लगती है। पीठ टेढ़ी हो जाती है और चारों पैर एकत्र हो जाते हैं।

फिर मुख, कान, सींग, पैर तथा अन्यान्य अङ्गोंपर ज्वर स्थिर नहीं रहता। कभी बदन ठंढा और कभी गर्म हो जाता है। स्वास अधिक चलता है, पागुर करना बन्द हो जाता है। सिर नीचा रहता है, ज्वरकी वृद्धि होती जाती है, नाड़ी तेज परन्तु ठीक नहीं चलती। जीभमें कांटे हो जाते हैं, मुंहके भीतर लाल हो जाता है।

इसके बाद मुँह, आँख और नाकके द्वारा स्लेष्मा निकलने लगता है और दुरगंध होती है। किसी किसीके आंखके नीचे सूजन रहती है। पशु बहुत दुर्बल हो जाता है, प्यास बढ़ती है और गलेके नीचे कोई वस्तु उतरनेसे कष्ट होता है। थूक लीलने पर खांसी होती है। खाल, सींग, कान, पैर और मुँह ठंढा हो जाता है। गर्भ रहनेसे गर्भ पात हो जाता है। गाय जमीन पर बैठ जाती है, खड़े रहनेकी

शक्ति नहीं रहती। गों, गों शब्द होता है और शरीर कांपता है। नाड़ी सुस्त हो जाती है और ६-१० दिनके भीतर गाय मर जाती है। कोई कोई २४ घंटेमें और कोई कोई १५, १६ दिनमें भी मरती है। कभी कभी चमड़ेपर फोड़े फुन्सीकी तरह दिखाई देने लगते हैं और ऐसी अवस्थामें गाय बच भी जाती है।

शरीरके दूषित पदार्थ जब तक बाहर नहीं होते तबतक पशुके बचनेकी आशा नहीं होती। जितना अधिक जोरसे चेचक निकलेगी उतनी ही अधिक आशा आराम होनेकी होगी।

औषधि इस प्रकार होनी चाहिये।

(१) कपूर ॥।) आना भर।

(२) शोरा ॥।) „ „

(३) धतूराके वीज ।) आना भर।

(४) चिरायता ॥।) आना भर।

(५) शराब ऽ= आध पाव।

पहलेकी चारों चीजोंको पीस कर चूर्ण करले फिर पांचवींके साथ मिला कर भातके साथ मिला कर दो बार सवेरे और सन्ध्या खिलना चाहिये।

चिड़ चिड़ाकी जड़ ४ तोला।

जैवालता ४ तोला।

सेमरकी जड़ ४ तोला।

सबका चूर्ण करके जवान गायको २० ग्रेन दिनमें तीन बार तीन दिन तक खिलाना चाहिये।

रोगके लक्षण दिखाई देने पर होमियो प्याथिक औषधियां भी निम्न प्रकार दी जा सकती हैं :—

एकोनाइट नेक (Aconitum Nap)

आरसेनिकम एल्ब (Arsinicum All)

तीन तीन घंटे पीछे १० दस बूंद उलट फेर कर देना चाहिये। फिर जिस समय चेचकके दाने दिखाई पड़ें, उस समय ऐंटी मोनियम टार्ट (Antimonium Tart) तीन तीन घंटेके अन्तरसे देना चाहिये।

यदि दाने बैठ जावें तो स्पिरिट कैम्फर (Spirit Campher) १० बूंदसे २० बूंद तक १० अथवा १५ मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। जब दाने अदृष्य हो जावें तो सलफर (Sulpher) भी देसकते है।

पथ्य—चावल और कलाई अच्छी तरह पकाकर उसका माड़ देना चाहिये। ताज़ी हरी घास व पत्ते दे सकते हैं। माड़के साथ नमक मिला कर देनी चाहिये। माड़ ठंढा करके देना उचित है गर्म किसी तरह न देनी चाहिये।

गला फूलना।

रक्त दूषित होनेसे गला फूलना, तथा मुँह और कंठमें घाव इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। इसमें जोरसे ज्वर आता है।

ज्वर अधिक होता है, कंठ, कान और गर्दनके पासकी

सब गांठें फूल उठती हैं। आंख और नाकके परदे लाल होजाते हैं। एक प्रकार प्लेगकी तरह दशा मालूम होती है। जितना ही रोग बढ़ता जाता है, उतना ही स्वास लेनेमें कष्ट होता है। गलेसे घड़ घड़ शब्द सुनाई देता है। मुखसे दुर्गन्ध निकलती है। स्वास बढ़ती जाती है। धीरे धीरे दम बन्द हो जाता है और पशु मर जाता है। यह रोग एक घंटेसे ३ दिनतक रहता है। इस रोगसे मृत्यु ८० सैकड़ा होती है।

एक तोला फिटकरी व थोड़ा सा गुड़ पानीमें मिलाकर उससे पशुका मुँह बारंबार धोनेसे उपकार होता है। दो सेर गर्म जलमें साबुन घोल कर एक छटांक सरसोंका तेल मिलाकर पिचकारी द्वारा आध आध घंटे पर गुदा द्वारा पिचकारी देनेसे जुलाब होगा और पशुको आराम मिलैगा।

धतूरेके बीजका चूर्ण ।≈) भर, कपूर ।।।) भर और शराब आध सेर मिला कर भातके माड़के साथ उसी अन्दाजका नमक मिलाकर खिलानेसे विशेष लाभ होता है।

गन्धक अथवा अलकतरेके धुवेंसे भी रोगी पशुको लाभ पहुंच सकता है।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

बेला डोना और मारक्यूरियस आयोडिसि ५ से १० बूंद दो दो घंटेमें एक दूसरेके बाद देनेसे लाभ होगा, यदि इससे लाभ न हो तो वियटेसिया और आरसेनिकएल्व ५ से १० बूंद तक दो दो घंटेके अन्तर देनेसे निश्चय लाभ होगा।

यदि इनसे लाभ न होतो डेपथिरियम ६ बूंद एक दिनमें दो बार देकर फिर कुछ न देना चाहिये इसीसे आराम हो जावेगा।

(Foot & Mouth Disease.)

खुरहा, खुसीटा।

यह एक प्रकारका ज्वर है, जिसको खुरहा, खुसीटा या खुरखुटा कहते हैं। यह एक छूतकी बीमारी है जो बहुत शीघ्र जहां किसी पशुको हुई कि उसके आसपासके स्थानोंमें सब पशुओंको हो जाती है। इस रोगसे पशु मरते नहीं, परंतु बड़ा कष्ट उठाते हैं। गायके मुँह तथा पैरमें एक प्रकारकी फुंसी हो जाती है, फिर वही फुंसी फट कर घाव हो जाता है, साथ ही साथ ज्वर चढ़ आता है, मुँहसे लार गिरती है और थन फूल जाते हैं।

गर्म जलमें फिटकरी घोल कर प्रतिदिन उसी जलसे मुंह, थन और पांव अच्छी तरह धोना चाहिये और एक छटांक तीसीके तेलमें दो तोला कपूर, छः माशे तारपीनका तेल और जौ भर भूना तूतिया मिलाकर घावोंपर लगाना चाहिये। जबतक आराम न हो, यही दवा करनी चाहिये। खानेके लिये नरम वस्तु देनी चाहिये।

दूसरी औषधि खुरोंमें लगानेकी यह है :—

कपूर एक माशा, तारपीनका तेल आधा तोला, मीठा तेल चार तोले इन सबको मिला कर घावोंमें लगाना चाहिये।

यदि खुरोंके घावोंमें कीड़े पड़ गये हों तो सादा तेल और तारपीनका तेल बराबर मिलाकर लगाना चाहिये। यदि तारपीन न मिले तो नीला थोथा चार तोले आधसेर गर्म जलमें गलाकर घावों पर डालना चाहिये। यदि यह भी न मिले तो तम्बाकू और वोबईके पत्ते कूटकर घावों पर बांधनेसे कीड़े मर जावेंगे।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

रोग होने पर आरसनिक एल्ब ८ बूंद तीन तीन घंटे पीछे देना चाहिये। जब रोग बहुत बढ़ जाय तब आरसनिक और वेलाडोना तीन घंटेके पीछे ८ बूंद करके खिलाना चाहिये।

पेटका फूल जाना।

अधिक चारा अथवा मौसमी चारा खानेसे यह रोग उत्पन्न होता है और इसकी उतपत्ति पेटमें खाना सड़ जानेसे होती है। इसकी पहचान यह है, कि पेट फूल जाता है और बांई कांखके पास एक गोला सा उभरा हुआ मालूम होता है। हाथसे ठोंकनेसे ढब ढब शब्द होता है, सांस लेने और हिलनेमें कष्ट होता है। यदि शीघ्र चिकित्सा न की जाय तो गाय मर जाती है।

औषधि इसकी—पिसी हुई सोंठ २ तोले, हींग ३ माशे, तारपीनका तेल आधी छटांक, खानेका नमक दो छटांक, बड़ी इलायची आधी छटांक, काली मिर्च चार माशे, इन सबको एक सेर पानीमें घोट कर पिलाना चाहिये। अथवा पिसी हुई लाल

मिर्च ६ माशे, अदरक चार तोले, हींग भुनी हुई तोला भर पीस कर गोली बनालेनी चाहिये और तीन तीन घंटे पीछे गर्म पानीके साथ खिलानी चाहिये।

सरसोंका तेल एकपाव और कुसुमके फूल आधा तोला मिलाकर पिलानेसे पेटका फूलना आराम होता है।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

पलसटीला नं० ३० के ६ बूंद प्रति आध घंटे पीछे देकर तीन खुराक खिला कर फिर १२ घंटे तक कोई वस्तु खानेको न देनी चाहिये और न कोई औषिध देनी चाहिये, १२ घंटे पीछे यदि वायु न खुले तो लाईकोपोडियम ६ बूंद तीन तीन घंटेके पीछे तीन बार देनेसे आराम होगा।

पेचिश (Dysentry.)

पेचिश वह रोग है, जिसके होनेसे गाय बार बार थोड़ा थोड़ा मैला, पतला खून व आंव मिला हुआ गोबर करती है। यह रोग गला, सडा और कड़ा चारा खानेसे होता है। कभी कभी सर्दीके लग जानेसे भी होता है।

औषधि—दो तोले बेलके फलका गूदा आधपाव आटे अथवा पाव भर पानीके साथ दोबार सन्ध्या सबेरे देना चाहिये। इसमें पहले जुलाब भी देना चाहिये फिर औषधि करनी चाहिये। जुलाब—मीठा तेल पावभर, अरंडीका तेल आध पाव, अलसीका लुआब आध सेर, अफीम ३ माशे। सबसे पहले पाव भर गर्म पानीमें अफीम हलकर ले फिर और सब वस्तुएं

मिलाकर गाय वा रोगी पशुको पिला दे, तब बेलका गूदा जुलाबके पीछे खिलावे।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

मरक्यूरियस ५ बूंद दो दो घंटेके अन्तरसे देना चाहिये। यदि दस्त अधिक आते हों, तो आरसनिक एल्ब ८ बूंद मरक्यूरियसके साथ अदल बदल कर दो दो घंटेमें देनेसे आराम होगा।

खांसी (Gough.)

खांसी दो प्रकाकी होती है, एक सर्दीसे और दूसरी गर्मीसे। सूखी खांसी गर्मीसे और जिसमें कफ आता है, वह सर्दीसे होती है। ऐसी अवस्थामें गायको ऐसे स्थानमें रखना चाहिये, जहां उसको सर्दी और ओस न लगे। यदि सर्दी अधिक हो तो कपड़ा ओढ़ा देना चाहिये।

औषधि—अरूसेके पत्ते एक छटांक, सांभर नमक टका भर, जौके आटेके साथ मिलाकर खिलाना चाहिये। यदि सर्दीसे खांसी है, तो सोंठ, सुहागा, कायफल, कुटकी, बायबिड़ंग, हींग, फिटकरी, काली मिर्च, सफेद जीरा इन सबको कूट छानकर मेथीके आटेमें मिलाकर एक छटांककी गोली बनावे और दिन भरमें दो अथवा तीन बार खिलावे।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

आरसनिक ६ बूंद प्रति ३ घंटेमें, यदि सर्दीसे खांसी हो, खिलानेसे लाभ होगा।

यदि गर्मीसे खांसी हो, तो क्रूटमटिगलियम ८ बूंद देना चाहिये, परंतु यह देख लेना होगा कि दस्त पतले आते हों।

खुजली।

तर खुजली वह है, जिसके होनेसे चमड़ा फटकर पानी सा बहने लगता है और कभी कभी पीप भी निकलती है।

औषधि—देसी साबुन, राई, सिंदूर बराबर भाग ऊँखके सिरकेमें पीस कर लेप कर देनेसे बैल अथवा गायकी तर खुजली अच्छी हो जाती है।

गंधक आधी छटांक, तम्बाकू आधी छटांक, मिट्टीका तेल दो तोले, सादा तेल आध पाव। इन सबको मिलानेसे मरहम बन जाता है और चट्टे छुड़ा कर आवश्यकतानुसार लगानेसे खुजली अथवा खाज मिट जायगी।

यह छूत वाली बीमारी है इस लिये जिन गायोंको यह बीमारी हो, उनको आरोग्य गायोंसे अलग रखना चाहिये।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

किसी प्रकारकी खुजली क्यों न हो ६ सात दिन तक लगातार एक खुराक सलफर (Sulpher) ६ बूंद नित्य देना चाहिये, इसके पीछे एक सप्ताह कोई औषधि न देनी चाहिये, इसपर यदि आराम न हो तो सोपिया एकबार ६ बूंद एक सप्ताह तक देनेसे अवश्य आराम होगा परंतु सीपिया पहले कभी न देना चाहिये।

दस्तोंकी बीमारी।

जब गाय या बैल बार बार पतला गोबर करता है, तो उसको दस्तोंका रोग कहते हैं। यह रोग बदहजमी, खराब खाना, पेटमेंकीड़ोंका होना अथवा कोई दस्त लानेवाली औषिधको बेअन्दाज खिला देने इत्यादिसे उत्पन्न होता है।

इस रोगको दूर करनेवाली सबसे अच्छी वह औषधि है; कि जिस कारणसे रोग हुआ है। अर्थात यदि ताजा घास खानेसे दस्त आनेलगे हैं, तो ऐसी घास न खिलानी चाहिये, यदि गन्दा पानी पीने अथवा सड़ी घास खानेसे दस्त आते हैं, तो उनको बन्द कर देने हीसे दस्त बन्द हो जावेंगे। यदि उपरोक्त बातोंके रोकने पर भी दस्त बन्द न हों, तो समझ लेना चाहिये, कि कोई खराब मवाद खूनमें है, जिससे आंतोंमें खुजली पैदा होती है और दस्त आते हैं। ऐसी दशामें जुलाब देना चाहिये। एक छटांक अरंडीका तेल और आध पाव मीठा तेल मिलाकर पिला देनेसे जुलाब हो जायगा और फिर दस्द बन्द हो जावेंगे। यदि इस पर भी दस्त आते रहें, तो पिसी हुई खड़िया मिट्टी एक छटांक, पिसा हुआ कत्था दो तोले, पिसी हुई सोंठ दो तोले, अफीम तीनमाशे, लुआव ईसबगोल आध पाव मिला कर सवेरे, सन्ध्या दो तीन दिन तक देनेसे दस्त बन्द हो जावेंगे। दूसरी औषधि—माजूफल दो तोला, चिरायता दो तोला, खड़िया मिट्टी तीन तोला कूट छान कर गर्म माड़में मिलाकर सवेरे सन्ध्या पिलानेसे दस्त बन्द होते हैं। यदि

दस्तोंके साथ आंव और रक्त भी जाता हो तो अफीम बारह आने भर, खड़िया मिट्टी तीन रुपये भर, सफेदा १॥ भर एक साथ मिलाकर तीन खुराक करके तीनबार दिनमें खिलानेसे आराम होगा।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

आरसेनिकम एल्व दस बून्द करके दो दो घंटेके अन्तरसे देनेसे लाभ होगा। यदि दस्तोंके साथ रक्त आता हो अथवा पीड़ा होती हो तो मरक्यूरियस ५ बूंद दो दो घण्टेके अन्तरसे देना चाहिये।

निमोनिया (Neumonia.)

निमोनिया उस रोगको कहते हैं, जिसमें फेफड़ों पर सूजन आ जाती है। यह रोग गर्मीमें एकदम ठंढ लगने, पानी पीते समय फेफड़ेमें पानीके चले जाने, फेफड़ेमें चोट लगने, अथवा खांसीके बढ़ जानेसे होता है। इस रोगमें गाय सुस्त रहती है, अधिक रोग बढ़ जानेसे खाना छोड़ देती है रोंआं फूला रहता है, टांगें फैली रहती हैं,मुँह और शरीरमें मक्खियां लिपटी रहती हैं, हवाकी ओर मुँह सोधा करके गाय खड़ी रहती है, नाककी झिल्ली लाल हो जाती है। ज्वर रहता है, नाकसे लाल रंगका जल बहता है।

इस रोगमें स्थानका बदलना बहुत ही उपयोगी होता है। जहां पशु रहे, वह स्थान सूखा और हवादार होना चाहिये। औषधि यह है:—

कलमी शोरा छः माशे, कपूर ३ माशे, धतूरेके बीज ६ माशे, देशी शराब आध पाव, मुलेठीका काढ़ा आध सेर इन सब औषधियोंको मिला कर दिनमें दो बार पिलानेसे लाभ होगा।

पथ्य—गेहूंका आटा आध सेर, अलसी पाव भर, दोनोंको सेरभर पानीमें डाल कर पकावे और फिर सेर भर दूध और आध पाव गुड़ मिला कर दिनमें तीन बार पिलावे। पानी दो बार पिलाना चाहिये, जिसमें दो तोले शोरा प्रत्येक बार मिलाकर देना चाहिये।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—एकोनाइटम या ब्राइयोनिया १० बून्द एक छटांक पानीके साथ देना चाहिये।

यह दो घंटे अथवा ३ तीन घंटेके अन्तरसे देना चाहिये, यदि इससे लाभ न हो तो फासफोरस अथवा सलफर १० बून्द पानीके साथ दिनमें तीन बार देना चाहिये।

पक्षाघात (लकवा) Paralasis.

लकवा वह रोग है, जिससे शरीरका कोई अंग सुन्न हो जाता है। गायका जो अंग सुन्न हो जाता है, उसमें सूई गड़ानेसे भी कुछ पीड़ा नहीं होती।

औषधि—देशी शराब एक छटांक, हींग भुनी हुई ६ माशे, अदरक पिसा हुआ दो तोले, दो दो घंटेके अन्तरसे पिलानेसे लाभ होगा—नीमकी पत्ती उबाली हुई नमक मिलाकर, जो अंग सुन्न हो गया हो, उस पर मलनेसे लाभ होगा।

होमियो प्याथिक चिकित्सा—

दस बूंद बेलाडोना और नक्सबोमिका प्रत्येक तीन घंटेके अन्तरसे देनेसे लाभ होगा।

विष खाकर जो पशु मर जाते हैं उसकी औषधि।

पशु विष खाकर मरते हैं। विष या तो बिना जाने चारेके साथ खा जाते हैं या जान बूझकर मार डालनेके लिये विष दिया जाता है। यह विष या तो वनस्पतिमें होता है, या खानेमें। भारतवर्षमें कहीं कहीं चमार लोग गाय और बैलको विष देकर मारते हैं, कि जिससे उनको चमड़ा मिले। भारतवर्ष भरमें यह रिवाज है, कि मरे हुए पशुको फेक देते हैं और चमड़ा गांवके चमारोंकी वस्तु समझी जाती है। किसी किसी स्थानमें चमार लोग जमीन्दारको चमड़ेके लिये भाड़ा देते हैं और मरे हुए पशुके चमड़े पर उनका इसी कारण स्वत्व होता है। बंगालमें ऐसे स्थानको भगार कहते हैं, जहां मुर्दा पशु भेज दिये जाते हैं और यह स्थान चमार लोग जमीन्दार अथवा म्यूनिसिपैलिटीसे भाड़े पर ले रखते हैं।

चमार लोग चमड़ा उन व्यवसाइयोंके हाथ बेचते हैं, जो चमड़ेका व्यवसाय करते हैं। किसी किसी स्थानमें चमारों और व्यवसाइयोंमें आमदनी चमड़ेका सौदा हो जाता है, जिसके अनुसार चमड़ेकी दर तै हो जाती है और एक नियत समयके भीतर उनका चमड़ा देना पड़ता है। चमारोंको व्यवसाई लोग कुछ रुपया पहलेसे उधार देदेते हैं। इसी कारण चमार अपना

कंट्राक्ट पूरा करनेके लिये छिप-लुक कर दूसरोंके पशुओंको विष देकर मार डालते हैं। अब चमड़ेका व्यवसाय पहलेसे बहुत बढ़ गया है क्योंकि सन् १८६५ ई० में ६० लाखका और सन् १९१४ ई०में १३ करोड़का चमड़ा भारतवर्षसे बाहर गया था। कभी कभी चमार विष देते हुए और कभी कभो उनके एजेंट विष खिलाते हुए पकड़े गये हैं। यह विष आटे अथवा और किसी वस्तुमें मिलाकर गाय और बैलको या तो खिला दिया जाता है, या पशुके सामने किसी पत्तेमें लपेट कर फेंक दिया जाता हैं जिसको कि पशु खा जाता है। कहीं कहीं, जहां पशु चरते हैं, वहां घासके ऊपर विष छिड़क देते हैं। कहीं कहीं किसी पैनी वस्तुसे पशुके शरीरके किसी स्थानमें विष घुसेड़ देते हैं,या गुदा द्वारा भीतर पहुंचा देते हैं।

धतूरा, कुचला और संखिया इत्यादि विषोंका प्रयोग किया जाता है। यह भी सच है, कि चमड़ेके व्यवसाई चमारोंको संखिया देते हैं। यह विष खिलाना उस स्थानमें, उस समय अधिक होता है, कि जिस समय चेचककी बीमारी फैली हुई होती है, जिससे कि लोगोंको विषका ध्यान भी न हो। चमार यह भी करते हैं, कि जो पशु चेचकसे मरता है, उसके पेटकी अलायश निकाल कर उस स्थानकी घासके ऊपर इधर उधर फेंक देते हैं, जहां कि बीमारी नहीं है। फिर जो पशु वहां चरने जाता है उसको चेचककी बीमारी हो जाती है और चमारोंको अपना काम पूरा करनेका अवसर मिल जाता है।

जब किसी गाय वा बैलको अधिक विष दिया जाता है, तो वह एक दमसे बीमार हो जाता है। कांपने लगता है और पेट पर लात और सींग मारता है। मुँहसे फेन निकलता है। प्यास अधिक लगती है। दस्त आने लगते हैं और थोड़ा बहुत रक्त भी निकलता है। दो से चार घंटेके भीतर मर जाता है। विष इतना अधिक देते हैं, कि औषधि कुछ काम नहीं कर सकती। परन्तु यदि शीघ्र मालूम हो जाय, तो दो सेर मीठा तेल अथवा तीसीका तेल पशुको पिलानेसे और जब तक अच्छा न हो, घंटे घंटे पर पिलानेसे आराम हो सकता है।

आरोग्य होने पर खानेके लिये दो तीन दिन तक तीसी, भूसी और उबाली हुई कलाई देनी चाहिये, फिर मुलायम दूब भी दे सकते हैं।

संखिया खानेसे दांत बैठ जाते हैं और जीभ सूख जाती है। मुँहमें थूकका नाम नहीं रहता, आंखें लाल होजाती हैं। सारा शरीर गर्म होजाता है। गुदासे काला रक्त झरता है। उस समय गायको दूध और घी खूब पिलाना, अथवा गुलाब जलमें कत्था घोल कर देना या केलेके पेड़की जड़के रसमें कपूर मिला कर पिलाना चाहिये। संखिया खानेसे मूत्र और मल-द्वारसे रक्त जाता हो, बेहोशी हो, दांत और जीभ नीली होगई हो, तो गौ का दूध पिलाना, गुलाब जलके साथ कपूर देना, खीरा या तरबूजका पानी पिलाना अथवा ईसबगोल या बिहीदानेका लुआब देना लाभ कारी होता है।

॥ इति ॥